दैनिक राष्ट्रीय समाचार पत्र

D Edition

Reg.No.RJ26D00120077

भारत टाइम्स

www.bharattimenews.com

सत्यमेव परं श्रुतम्

Bharattimesnews01@gmail.com

पेज 4

विचार

"मुझे लगता है कि यह सब प्रेम का मामला है; जितना अधिक आप किसी स्मृति से प्रेम करते हैं, वह उतनी ही मजबूत और अजीब हो जाती है"

वर्ष- 2 | अंक-165 | दिल्ली, शनिवार 27 जुलाई 2024 | पेज-8 | ई-पेपर नई दिल्ली से प्रसारित

कारगिल विजय दिवस की 25वीं वर्षगांठ पर पीएम मोदी बोले

अग्निवीर पर झूठ फैला रहा विपक्ष

द्रास। कारगिल विजय दिवस की 25वीं वर्षगांठ पर शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लद्दाख में 1999 की जंग के नायकों को श्रद्धांजलि दी। वे कारगिल वॉर मेमोरियल भी गए। करीब 20 मिनट के संबोधन में पीएम ने पाकिस्तान, आतंकवाद, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, अग्निपथ योजना और विपक्ष पर बात की। पीएम ने कहा कि पाकिस्तान प्रॉक्सी वॉर के जरिए चर्चा में बना रहना चाहता है। उन्होंने अपने इतिहास से कुछ नहीं सीखा। अतीत में आतंकवाद को लेकर उनके हर प्रयास विफल रहे। मैं जहां खड़ा हूं, वहां से आतंक के आकाओं तक मेरी आवाज पहुंच रही होगी। उनके मंसूबे कभी कामयाब नहीं होंगे।

टनल की आधारशिला रखी

प्रधानमंत्री मोदी ने कारगिल वॉर मेमोरियल पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद लद्दाख में शिंकुन ला टनल प्रोजेक्ट के लिए पहला वर्चुअल ब्लास्ट किया। यह दुनिया की सबसे ऊंचाई पर बनने वाली टनल है। समुद्र तल से इसकी ऊंचाई करीब 15,800 फीट है। यह हिमाचल प्रदेश की लाहौल वैली को लद्दाख की जास्कर वैली से जोड़ेगी। 4.1 किमी लंबी यह टनल निमू-पदुम-दारचा रोड पर बनाई जाएगी। इसे बनाने में करीब 1681 करोड़ रुपए का खर्च आएगा। सीमा सडक संगठन (बीआरओ) करीब दो साल में बनाकर तैयार करेगा। इलाके में साल के चार-पांच महीने बर्फ जमी रहती है। टनल बन जाने के बाद यहां सालभर आवाजाही की जा सकेगी। शिंकुन ला टनल एक ट्विन-ट्यूब डबल लेन टनल होगी। इसमें हर 500 मीटर के बाद क्रॉस पैसेज होंगे। इसके अंदर सुपरवाइजरी कंट्रोल एंड डेटा एक्विजिशन सिस्टम, मैकेनिकल वेंटिलेशन सिस्टम, फायर फाइटिंग सिस्टम और कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी जैसी सुविधाएं होंगी।

पेड़ से टकराई पैसेंजर ट्रेन, पायलट घायल

इंजन के दो पहिए ट्रैक से उतरे

कांकेर। छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले में बालोद के दल्ली राजहरा से भानुप्रतापपुर, अंतागढ़, दुर्ग, रायपुर तक चलने वाली पैसेंजर ट्रेन हादसे का शिकार हो गई। पैसेंजर ट्रेन ट्रैक पर पड़े बरगद के पेड़ से टकरा गई, जिसमें पायलट को हल्की चोटें आई हैं। घटना भानुप्रतापपुर के मुल्ले कैंप के पास की है। ट्रेन के घायल लोको पायलट का नाम पवन कुमार टंडन बताया जा रहा है। पायलट को नजदीकी अस्पताल ले जाया गया है, जहां उसका इलाज जारी है। बताया जा रहा है कि पैसेंजर की अधिकतर बोगियां खाली थी, जिससे ट्रेन में कुछ ही यात्री सवार थे। सभी यात्री सुरक्षित हैं। इंजन के दोनों पहिए ट्रैक से नीचे उतर गए जानकारी के मुताबिक ट्रेन के सामने का हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया है। बताया जा रहा है कि टक्कर इतनी जोर की थी कि इंजन के दोनों पहिए ट्रैक से नीचे उतर गए, जिसके चलते ट्रेन ट्रैक पर ही फंसी रही। बताया जा रहा है कि करीब 4 घंटे कड़ी मशक्कत के बाद इंजन को पटरी पर चढ़ाया गया। पेड़ को काटकर ट्रैक क्लियर किया गया साथ ही पेड़ को काटकर ट्रैक क्लियर किया गया।

कारगिल विजय दिवस पर सीएम डॉ. मोहन यादव ने की घोषणा

मप्र में अग्निवीरों को पुलिस भर्ती में मिलेगा आरक्षण

- अब आमजन इसे देख सकेंगे। गौरतलब है कि सरकार ने 2022 में अग्निपथ योजना लॉन्च की

भोपाल। मप्र में सरकार अग्निवीर जवानों को पुलिस और सशस्त्र बलों की भर्ती में आरक्षण देगी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कारगिल विजय दिवस पर ये घोषणा की है। कितना प्रतिशत आरक्षण दिया जाएगा, अभी ये तय नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अग्निवीर योजना सेना के आधुनिकीकरण के साथ योग्य सैनिकों की भर्ती करने और वैश्विक स्तर पर सेना को युवा बनाने की योजना है। पीएम मोदी की मंशा के अनुसार राज्य सरकार उनकी संकल्प सिद्धि के लिए काम करेगी। सीएम ने शुक्रवार को भोपाल में शौर्य स्मारक पर भारत माता की प्रतिमा के साथ ही शहीदों को नमन किया। उन्होंने शौर्य स्मारक परिसर में स्थापित सेना के टी-55 टैंक का लोकार्पण भी किया। अब आमजन इसे देख सकेंगे। गौरतलब है कि सरकार ने 2022 में अग्निपथ योजना लॉन्च की। इसके तहत आर्मी, नेवी और एयर फोर्स में चार साल के लिए नौजवानों को कॉन्ट्रैक्ट पर भर्ती किया जाता है। चार साल में छह महीने की ट्रेनिंग भी शामिल है। चार साल बाद जवानों को उनकी कार्यक्षमता के आधार पर रेटिंग दी जाएगी। इसी मेरिट के आधार पर 25 प्रतिशत अग्निवीरों को परमानेंट सर्विस में लिया जाएगा। बाकी लोग वापस सिविल दुनिया में आ जाएंगे। इस स्कीम में ऑफिसर रैंक के नीचे के सैनिकों की भर्ती होगी। यानी इनकी रैंक पर्सनल बिलो ऑफिसर रैंक के तौर पर होगी। साल में दो बार रैली के जरिए भर्ती की जाएगी। अग्निवीर बनने के लिए 17.5 साल से 21 साल का होना जरूरी है। साथ ही कम से कम 10वीं पास होना जरूरी है। 10वीं पास भर्ती होने वाले अग्निवीरों को 4 साल की सेवा पूरी करने के बाद 12वीं के समकक्ष सर्टिफिकेट दिया जाएगा।

न्यूज. ब्रीफ

एमएलसी को भारी पड़ी नीतीश की नकल

नई दिल्ली। राष्ट्रीय जनता दल एमएलसी सुनील सिंह की सदस्यता शुक्रवार को समाप्त कर दी गई। सुनील सिंह के खिलाफ यह कार्रवाई प्रदेश के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की नकल करने के मामले में की गई है। यह फैसला विधान परिषद की आचार समिति की रिपोर्ट के बाद लिया गया है। राजद एमएलसी पर आरोप है कि उन्होंने सदन में असंसदीय और अमर्यादित व्यवहार किया। विधान परिषद की आचार समिति की रिपोर्ट आने के बाद सभापति अवधेश नारायण सिंह ने सुनील कुमार सिंह की सदस्यता रद्द करने के आदेश दिए।

कुएं में दम घुटने से 4 लोगों की मौत

कटनी। कटनी में कुएं में उतरे 4 किसानों की दम घुटने से मौत हो गई। किसान गुरुवार शाम को कुएं में उतरे थे। ऑक्सीजन की कमी होने से बेहोश हो गए। ग्रामीणों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने एनडीआरएफ की टीम को बुलाया। रात करीब 12 बजे रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू हुआ। किसानों को बाहर निकाला, तब तक उनकी मौत हो चुकी थी। आशंका जताई जा रही है कि कुएं के अंदर ऑक्सीजन की कमी थी। जहरीली गैस भी बनी हुई थी, जिसके कारण दम घुटने से चारों की मौत हो गई। पुलिस पूरे मामले की जांच में जुटी है।

रेप के दोषी भारतीय को 12 साल की सजा

वॉशिंगटन। अमेरिका में एक भारतीय शख्स को 13 साल की बच्ची को फुसलाकर उसके साथ यौन संबंध बनाने की कोशिश करने के मामले में दोषी ठहराया गया है। अमेरिकी फेडरल कोर्ट ने उसे 12 साल की सजा सुनाई है। आरोपी शख्स सोशल मीडिया पर एक 13 साल की बच्ची के साथ बातचीत करता था। इस दौरान उसने कई बार उसके साथ यौन संबंध बनाने की इच्छा जताई। वह उसे कई अश्लील तस्वीरें भी भेजता था। हालांकि, इस प्रोफाइल को असल में एक अमेरिकी अंडरकवर जासूस ऑपरेट कर रहा था।

तनिष्क शोरूम से 20 करोड़ की लूट

पूर्णिया। पूर्णिया में शुक्रवार सुबह तनिष्क शोरूम में दिनदहाड़े 20 करोड़ की ज्वेलरी की लूट हुई है। इनमें 10 करोड़ से ऊपर हीरे के गहने हैं। बाकी सोने की ज्वेलरी बताई जा रही है। बाइक से आए 6 अपराधियों ने वारदात को अंजाम दिया है। सभी के पास हथियार थे। पहले 3 अपराधी शोरूम में कस्टमर बनकर घुसे थे। इसके बाद तीन और अंदर गए। फिर सभी ने गन पॉइंट पर लूटपाट की। लूटपाट के दौरान बदमाशों ने शोरूम के कर्मचारी और ग्राहकों को ऊपर वाले फ्लोर पर बंधक बना लिया था। घटना पूर्णिया के सहायक खजांची थाना क्षेत्र के डाकबंगला चौक स्थित तनिष्क शोरूम की है। 20 मिनट में अपराधी पूरी वारदात को अंजाम देकर निकल गए। पुलिस के अधिकारी मौके पर पहुंचे हैं। मामले की जांच की जा रही है।

रायसेन में बारना में बाढ़, नाले में बहा स्कूली ऑटो...विदिशा में सडकों पर दो फीट पानी...निवाड़ी में मकान ढहा, दंपती और दो बच्चे दबे

रायपुर समेत कई जिलों में जोरदार बारिश..एम्स में भरा पानी...कोंडागांव में दीवार गिरने से बच्चे की मौत; बेमेतरा में 3 दिन स्कूलों की छुट्टी

भोपाल/रायपुर। मप्र और छग में मानसून की बारिश अब परेशानी बन गई है। मप्र में मानसून एक्टिविटी की वजह से भोपाल, गुना, विदिशा और रायसेन में शुक्रवार सुबह से तेज बारिश हो रही है। विदिशा में सडकों पर 2 फीट पानी भर गया।रायसेन में भी सुबह से हो रही तेज बारिश से नदी-नालों में बाढ़ आ गई। बाड़ी का रायसेन से संपर्क टूट गया। बेगमगंज में स्कूली बच्चों को छोडकर लौट रहा एक ऑटो नाले में बह गया। उज्जैन और राजगढ़ में हल्की बारिश हो रही है। रतलाम में भारी बारिश का पानी घर-दुकानों में घुस गया। निवाड़ी के पृथ्वीपुर में मकान ढह गया। मलबे में पति-पत्नी और दो बच्चे दब गए। महिला और एक बच्चा गंभीर घायल हैं। वहीं छत्तीसगढ़ में रायपुर समेत कई जिलों में सुबह से जोरदार बारिश हो रही है। एम्स परिसर में पानी भर गया है। मौसम विभाग ने भी आज 16 जिलों में यलो अलर्ट जारी किया है। बारिश के चलते बेमेतरा में कलेक्टर ने 3 दिन स्कूल बंद रखने के आदेश जारी किए हैं। बारिश के दौरान कई जगह हादसों की भी खबरें हैं। कोंडागांव जिले में टॉयलेट की दीवार गिरने से 10 साल के बच्चे की मौत हो गई। दल्लीराजहरा से अंतागढ की तरफ जा रही पैसेंजर ट्रेन ट्रैक पर गिरे बरगद के पेड़ से टकरा गई है। हादसे में ड्राइवर को चोट आई है। वहीं, गरियाबंद जिले के चलनापदर में बना नया चेक डैम 15 दिन में ही टूट गया। कोरबा की पितनी नदी में आई बाढ़ में एक गाय बह गई। जुलाई का बारिश का कोटा पूरा हो चुका है। प्रदेश में शुक्रवार सुबह तक 506.4 मिमी पानी बरस चुका है। मप्र में अब तक सामान्य 15.2 इंच बारिश हो चुकी है। यह एवरेज से 1 प्रतिशत ज्यादा है। प्रदेश के पश्चिमी हिस्से- भोपाल, इंदौर, उज्जैन, नर्मदापुरम, ग्वालियर-चंबल संभाग में एवरेज से 3 प्रतिशत ज्यादा पानी गिर चुका है जबकि पूर्वी हिस्से- रीवा, सागर, जबलपुर और शहडोल संभाग में 1 प्रतिशत कम बारिश हुई है। हालांकि, लगातार तेज बारिश होने से आंकड़ा बढ़ रहा है।

एमपी के बांधों का जलस्तर

बांध टैंक	लेवल	अभी जलस्तर	कितना खाली
कोलार डैम, सीहोर	462.2	456.88	5.32
बाणसागर डैम, शहडोल	341.64	331.85	9.79
गांधीसागर डैम, मंदसौर	399.9	394.53	5.37
इंदिरा सागर डैम, खंडवा	262.13	249.77	12.36
ओंकारेश्वर डैम, खंडवा	196.6	194.48	2.12
मोहनपुरा डैम, राजगढ़	398	394.7	3.30
गोपीकृष्ण सागर डैम, गुना	434	427.5	6.50
संजयसागर डैम, विदिशा	448.2	443.82	4.38
तिघरा डैम, ग्वालियर	225.55	221.28	4.27
टिल्लर डैम, शाजापुर	439.9	433	6.90
कलियासोत डैम, भोपाल	505.67	502.6	3.07
बरगी डैम, जबलपुर	422.76	415.65	7.11
कुंडालिया डैम, राजगढ़	400	393.7	6.30
तवा डैम, नर्मदापुरम	355.4	349.42	5.98

नोटः आंकड़े मीटर में

टीकमगढ़ में परकुलेशन टैंक बहा

टीकमगढ़ की ग्राम पंचायत मऊ बुजुर्ग में मनरेगा योजना के तहत बनाया गया परकुलेशन टैंक बारिश के पानी में बह गया। इसे चार लाख रुपए की लागत से बनाया गया था। जनपद पंचायत जतारा के सीईओ सिद्ध गोपाल वर्मा ने कहा- मामले की जांच कराई जाएगी। दोषियों के खिलाफ सख्त एक्शन लिया जाएगा। मैहर में नदी में बहा ग्रामीण मैहर के ग्राम डूडी में देर रात रपटा पार करने के दौरान एक ग्रामीण बह गया। अमदरा पुलिस और एसडीईआरएफ की टीम उसकी तलाश में जुटी है।

अचानक शेयर बाजार में तूफानी तेजी...

सेंसेक्स 1300 अंक उछला

नई दिल्ली। कारोबारी हफ्ते के आखिरी दिन शुक्रवार को शेयर बाजार में जोरदार तेजी देखने को मिली। ग्लोबल संकेत मिले-जुले होने के बावजूद भारतीय शेयर बाजार का तेज ओपनिंग के बाद शानदार क्लोजिंग रहा। सेंसेक्स में 1300 से ज्यादा अंकों की तेजी दर्ज की गई। जबकि निफ्टी में दमदार 440 अंकों का उछाल आया। शुक्रवार को सेंसेक्स 80,158.50 अंक पर खुला था, और कारोबार के अंत में 1,347.36 अंक चढकर 81,387.16 पर बंद हुआ। जबकि निफ्टी 24,423.35 अंक पर खुला और आखिर में 443 अंक चढकर 24,849.60 अंक पर बंद हुआ। अगर तेजी की बात करें तो टेलिकॉम कंपनियों के शेयरों में अच्छी खासी-तेजी देखी गई। सेंसेक्स की टॉप-30 कंपनियों में सबसे ज्यादा एयरटेल के शेयर में करीब 5 फीसदी की तेजी देखी गई। वोडा आइडिया के शेयर भी 5 फीसदी भागे। इसके अलावा लॉर्जकैप में अपोलो हॉस्पिटल में 4 फीसदी से ज्यादा, अडानी पोर्ट्स में 4 फीसदी, अडानी एंटरप्राइजेज में 4 फीसदी की तेजी दर्ज की गई। विप्रो के शेयर में शानदार 3.64 फीसदी तेजी दर्ज की गई।

विधेयकों को मंजूरी देने से इनकार का मामला

सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र, बंगाल-केरल के राज्यपालों से मांगा जवाब

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को केंद्र सरकार, पश्चिम बंगाल और केरल के राज्यपालों के सचिवों से विधेयकों को मंजूरी न देने के मुद्दे पर जवाब मांगा है। राज्य सरकारों ने इस मामले में याचिका दायर की थी, इन्हीं याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट ने जवाब मांगा है। मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने केंद्रीय गृह मंत्रालय और दोनों राज्यपालों के सचिवों को नोटिस जारी किए। केरल की ओर से पेश वरिष्ठ वकील केके वेणुगोपाल ने कहा कि वे विधेयकों को राष्ट्रपति के विचारार्थ भेजने के राज्यपाल के फैसले को चुनौती दे रहे हैं। पश्चिम बंगाल की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक सिंघवी और जयदीप गुप्ता ने कहा कि जब भी मामला सुप्रीम कोर्ट में सूचीबद्ध होता है, राज्यपाल कार्यालय विधेयकों को राष्ट्रपति के पास भेज देता है। राज्य सरकारों ने राज्यपालों द्वारा कई विधेयकों को मंजूरी देने में की जा रही कथित देरी पर चिंता जताई। यह विवाद राज्य विधानसभाओं द्वारा पारित विधेयकों को राज्यपाल द्वारा मंजूरी न दिए जाने से जुड़ा है। राज्य सरकारों का आरोप है कि राज्यपाल इन विधेयकों पर अपनी सहमति नहीं दे रहे हैं, जिससे जनता को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से लाए गए अहम विधायी उपायों में देरी हो रही है। राज्य सरकारों की याचिका पर ही सुप्रीम कोर्ट ने राज्यपाल कार्यालयों और केंद्र को नोटिस जारी किया है।

भाजपा नेता प्रभात झा का निधन

गुरुग्राम के अस्पताल में ली अंतिम सांस

भोपाल। भाजपा के सीनियर लीडर और पूर्व मध्यप्रदेश अध्यक्ष प्रभात झा का निधन हो गया है। गुरुग्राम के मेदांता अस्पताल में आज सुबह 5 बजे उन्होंने अंतिम सांस ली। 67 वर्षीय झा लंबे समय से बीमार चल रहे थे। उनके बेटे अयत्न ने कहा कि अंतिम संस्कार शनिवार दोपहर 3 बजे बिहार के सीतामढ़ी जिले के कोरियाही गांव में होगा। प्रभात झा को करीब 26 दिन पहले भोपाल के एक निजी अस्पताल से एयरलिफ्ट कर गुरुग्राम ले जाया गया था। प्रभात झा मूल रूप से बिहार के रहने वाले थे। उनका जन्म 4 जून 1957 को बिहार के दरभंगा के हरिहरपुर गांव में हुआ था। वे परिवार के साथ मध्यप्रदेश के ग्वालियर आ गए थे। प्रारंभिक शिक्षा के बाद प्रभात झा ने ग्वालियर के पीजीवी कॉलेज से बीएससी, माधव कॉलेज से राजनीति शास्त्र में एमए और एमएलबी कॉलेज से एलएलबी की डिग्री ली। उनकी शादी रंजना झा से हुई थी। दो बेटे हैं। बड़े बेटे तुष्मुल और छोटे अयत्न झा हैं। शादी के बाद वे पत्रकारिता करने लगे।

संसद में किसानों के मुद्दे पर प्रश्नकाल के दौरान जोरदार हंगामा, एमएसपी पर कानून के सवाल के जवाब में कृषि मंत्री शिवराज ने कहा

समिति की रिपोर्ट आएगी तब हम कार्रवाई करेंगे

नई दिल्ली। राज्यसभा में किसानों के मुद्दे पर प्रश्नकाल के दौरान जोरदार हंगामा हुआ। प्रश्नकाल के दौरान समाजवादी पार्टी (सपा) के सांसद रामजी लाल सुमन ने 12 जुलाई 2000 को किसानों की समस्याओं पर बनी कमेटी की बैठकों के ब्यौरे को लेकर सवाल किया। इसके जवाब में कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि किसान हमारे लिए भगवान की तरह है और किसान की सेवा हमारे लिए पूजा जैसी है। उन्होंने कहा कि इस समिति का गठन तीन उद्देश्यों- एमएसपी उपलब्ध कराने और व्यवस्था को पारदर्शी बनाने के साथ कृषि मूल्य को अधिक स्वायत्तता और कृषि वितरण प्रणाली के लिए सुझाव देने के लिए। उचित दाम देने के लिए समिति की रिपोर्ट आएगी तब हम कार्रवाई करेंगे। कृषि मंत्री ने कहा कि समिति की 22 बैठकें हो चुकी हैं। समिति जो सिफारिश देगी, उस पर विचार किया जाएगा। इस पर रामजी लाल सुमन ने कहा कि ये अनिश्चितता का वातावरण है।

सरकार की छह सूत्रीय रणनीति

कृषि मंत्री ने कहा की कृषि के लिए सरकार की छह सूत्रीय रणनीति है। शिवराज ने उत्पादन बढ़ाने से लेकर लागत घटाने तक के उपाय गिनाए और कहा कि हमें किसान विरोधी कहा जा रहा है। नरेंद्र मोदीजी से बड़ा किसान हितैषी कोई है नहीं। उचित दाम देने के लिए समिति की रिपोर्ट आएगी तब हम कार्रवाई करेंगे। लेकिन तब तक हम चुप नहीं बैठे हैं। उन्होंने फसलों के एमएसपी के दाम बढ़ाए जाने के आंकड़े गिनाए और कहा कि इन 23 फसलों के दाम देख लीजिए। इस दौरान विपक्ष के सदस्यों ने हंगामा शुरू कर दिया।

बजट में मिली पेयजल व सिंचाई योजनाओं की सौगातों से अलवर को मिलेगा भरपूर जल

आमजन मुख्यमंत्री के भागीदारी कार्यों का जता रहे है आभार

♦भारत टाइम्स♦

अलवर /राजेश गुप्ता। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में शामिल अलवर जिला औद्योगिक एवं कृषि के क्षेत्र में प्रदेश में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है तथा केंद्र व राज्य की राजधानियों के बीच में स्थित होने के कारण इसका महत्व और भी बढ जाता है। यहां विगत वर्षों से कम बरसात व लगातार भू-जल दोहन से सम्पूर्ण अलवर जिला डार्क जोन में चला गया है जिसमें पेयजल व सिंचाई के पानी का संकट उत्तरोतर बढ रहा है। यहां सतही जल से पेयजल आपूर्ति की कोई योजना नहीं होने के कारण पूरा जिला भू-जल पर ही निर्भर है। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने ईआरसीपी योजना को अमलीजामा पहनाने की दिशा में भागीरथी कदम बढ़ाये है जिसके के तहत मध्यप्रदेश सरकार के साथ एमओयू करके पूर्वी राजस्थान के 21 जिले के लिए जलसंकट को दूर कर खुशहाली लाने का काम किया है। इस पेयजल परियोजना से पूर्वी राजस्थान के 21 जिले लाभांवित होंगे इसमें अलवर जिले को भी इस योजना को भी भरपूर पानी मिल सकेगा। अलवर जिले की पेयजल समस्या को दूर करने की विगत वर्षों की मांग को ध्यान में रखते हुए राजस्थान सरकार द्वारा पेश किए गए बजट 2024-25 में अलवर जिले के पेयजल संकट को दूर करने एवं भूजल स्तर को बढाने के लिए बहुत सारी सौगातें दी गई है जिससे जिले की पेयजल समस्या का समाधान होने के साथ ही सिंचाई के लिए किसानों को पानी मिलने से जिले में खुशहाली आएगी। राज्य सरकार के इस ऐतिहासिक कदम से जिलेवासियों में खुशी की लहर है तथा जिलेवासियों ने मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के इस कदम को अलवर जिले के लिए भागीरथी कदम बताया है। बजट में 5 हजार 374 करोड रुपए की राशि से पीकेईआरसीपी योजना के तहत अलवर सहित अन्य जिलों को पानी मिलेगा जिससे क्षेत्र की पेयजल समस्या दूर होगी। इसी प्रकार अलवर शहर की पेयजल समस्या के तत्कालीन समाधान के लिए 23 करोड 26 लाख रुपए की लागत से सिलीसेढ क्षेत्र के ट्यूबवेल व पाइप लाइन के माध्यम से अलवर शहर को पेयजल उपलब्ध कराया जाएगा। जयसमंद बांध में जलापूर्ति हेतु 40 करोड रुपए की लागत से नटनी के वियर से जयसमंद बांध तक निर्मित नहर का उन्नयन कार्य कराया जाएगा जिससे बांध का भराव होगा जिससे भूजल रिचार्ज हो सकेगा इसी प्रकार करौली की भद्रावती नदी की तर्ज पर रूपारेल-अलवर नदी का कायाकल्प होने से पानी की आवक बढेगी जिससे भूजल स्तर में बढोतरी होगी। पीकेईआरसीपी परियोजना के अंतर्गत डूंगरी बांध से अलवर रिजर्ववायर तक विभिन्न कार्य कराए जाएंगे। अलवर जिले के ग्रामीण क्षेत्र की पेयजल समस्या को तात्कालीन रूप से दूर करने के उद्देश्य से जिले की प्रत्येक विधानसभा में 20 हैण्डपम्प व 10 ट्यूबवेल लगने से जिले के सुदूर क्षेत्रों तक के लोगों को पेजयल उपलब्ध हो सकेगा। भाखेडा एनीकट का मरम्मत एवं जीर्णोद्धार कार्य एवं शहरों में ड्रेनेज एवं जल संरक्षण संबंधी निर्माण कार्य पूर्ण होने पर जल का भलीभांति उपयोग हो सकेगा।

शहीदों का त्याग सदैव स्मरणीय है – कर्नल सारंगदेवोत

भूपाल नोबल्स संस्थान में 25 वां कारगिल विजय दिवस मनाया

♦भारत टाइम्स♦

उदयपुर। भूपाल नोबल्स संस्थान की भूपाल नोबल्स पी.जी. कन्या महाविद्यालय, उदयपुर की एन सी सी की 5राज आर्मी गर्ल्स बटालियन के कैडेट्स द्वारा कारगिल विजय दिवस के 25 वें वर्ष के अवसर पर शहीदों के त्याग और बलिदान का स्मरण करते हुए लघु नाटक का प्रस्तुतीकरण किया गया। इस अवसर पर कैडेट्स द्वारा कारगिल विजय के अवसर पर बनाई गई चित्रों की प्रदर्शनी भी लगाई गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि 5राज आर्मी गर्ल्स बटालियन कमांडिग ऑफिसर राजेश सिंह ने कैडेट्स की प्रस्तुति की सराहना करते हुए कहा कि यह दिवस सदैव हमारे सैनिकों के शौर्य एवं साहस को याद करने का दिवस है। उनके वीरतापूर्ण साहस से ही भारत कारगिल विजय प्राप्त कर सका। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कर्नल प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने कहा कि कारगिल विजय भारत की ऐतिहासिक उपलब्धि है। यह उपलब्धि हमारे देश के सैनिकों की बहादुरी शौर्य और त्याग का परिणाम है। हमें शहीदों के त्याग का सदैव स्मरण करना चाहिए। वे सदैव स्मरणीय रहेंगे। भूपाल नोबल्स संस्थान के प्रबंध निदेशक मोहब्बत सिंह राठौड़, वित्त मंत्री शक्ति सिंह कारोही, सयुंक्त मंत्री राजेन्द्र सिंह ताणा ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किये। कन्या इकाई अधिष्ठाता डॉ शिल्पा राठौड ने कारगिल विजय दिवस को गौरव का प्रतीक बताया। इस अवसर पर सूबेदार राजेन्द्र सिंह, डीन पी जी स्टडीज डॉ. प्रेमसिंह रावलोत, विज्ञान संकाय अधिष्ठाता डॉ. रेणु राठौड़, सहअधिष्ठाता डॉ. रितु तोमर, पीआरओ डॉ के एस राठौड़, डॉ बी एस चौहान, सहअधिष्ठाता डॉ ज्योतिरादित्य सिंह, बीएन पब्लिक स्कूल की प्राचार्य डॉ सीमा नरूका, संकाय सदस्य, विद्यार्थी आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। उक्त जानकारी मेजर डॉ अनिता राठौड़ ने बताया कि इस अवसर पर अतिथियों द्वारा कैडैट्स द्वारा बनाये गए कारगिल विजय चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया।

किसानों और फसलों से जुड़े मुद्दे को लेकर नेता प्रतिपक्ष ने भाजपा को घेरा

किसानों और फसलों से जुड़े मुद्दे को लेकर नेता प्रतिपक्ष ने भाजपा को घेरा

अलवर/राजेश गुप्ता। नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने शुक्रवार को राजस्थान विधानसभा में प्रदेश के अन्नदाता किसान से जुड़े बाजरे एवं गेहूं के समर्थन मूल्य के मुद्दे को जोरदार तरीके से रखते हुए सदन में प्रदेश की भाजपा सरकार को घेरा। जूली बोले लांछन लगाना हमारा उद्देश्य नहीं,हमने जो प्रश्न लगाए,उनका सही उत्तर मिले,घुमा फिराकर उत्तर हमें नहीं मिले। उन्होंने कहा की भाजपा के घोषणा पत्र में समर्थन मूल्य का हवाला है हम चाहते थे मंत्री का जवाब आए कि हमारा घोषणा पत्र समर्थन मूल्य का जिक्र है, इस बार हम बाजरे की खरीद शुरू कर देंगे। उन्होंने कहा कि देश के पीएम किसानों के प्रति बेहद चिंतित दिख रहे हैं लेकिन राजस्थान सरकार इसके विपरीत बेपरवाह बनी हुई है।। उन्होंने कहा कि आपने गेहूं के समर्थन मूल्य की 2700 रुपए की बात कही,लेकिन आप 125 रुपए ही बढ़ा पाए,अगर आप आज घोषणा कर देंगे तो राजस्थान के किसानों में खुशी होगी। उन्होंने कहा कि अगर आप बाजरे की डिमांड को लेकर आस्वस्त कर पाए हैं तो राजस्थान में बारिश हो रही है और सरकार भी बरस जाए तो राम भी राजी और राज भी राजी।

कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने सैनिक परिवार के वीरांगनाओं को किया सम्मानित

♦भारत टाइम्स♦

जयपुर/अलवर/ राजेश गुप्ता। राजस्थान सरकार कैबिनेट मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने आज कारगिल विजय दिवस की 25वीं वर्षगांठ के अवसर पर जयपुर स्थित अमर जवान ज्योति पर मातृभूमि की रक्षा हेतु अपना सर्वोच्च बलिदान देने वाले अमर बलिदानियों को पुष्पांजलि अर्पित की। इस दौरान युद्ध में शहीद हुए सैनिक परिवार के आश्रितों व वीरांगनाओं को सम्मानित किया। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने कारगिल विजय दिवस के अवसर पर सभी अमर शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि कारगिल विजय दिवस भारतीय सेना के अदम्य साहस, शौर्य और समर्पण का प्रतीक है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हमारे देश की सेनाएं दुश्मनों को जवाब दे रही है।

कारगिल विजय दिवस पर विद्यालय के विद्यार्थियों ने निकाली तिरंगा रेली

♦भारत टाइम्स♦

मुकेश शर्मा गोविन्द गढ़ अलवर। गोविन्द गढ़ कस्बे में कारगिल विजय दिवस के मौके पर जे पी एस सेकेंड्री स्कूल के छात्र एवम छात्राओ ने जालुकी रोड पेट्रोल पम्प से हाई स्कूल तक तिरंगा रेली निकाली। इस रेली को भाजपा नेता सुखवंत सिंह, थाना अधिकारी मुकेश मीणा, पूर्व सरपंच नीरज गर्ग, सुभाष गर्ग, दामोदर गर्ग, राधे श्याम जाटव सहित अन्य गण मान्य लोगो ने तिरंगा झंडा दिखाकर रवाना किया।

विद्यालय के डायरेक्टर सुनील भारद्वाज ने बताया की कारगिल दिवस को 25वर्ष पूर्ण हो गए। ओर देश के जबांजो ने अपने खून से इस युद्ध को जीता था। इस जीत की खुशी में प्रति वर्ष तिरंगा रेली निकाली जाती हैं। ओर इस बार भी कस्बे के प्रमुख बाजारों में इस तिरंगा रेली का आयोजन किया गया है। जिसका रास्ते में कस्बे वासियों ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया।

संगम विश्वविद्यालय में नए आपराधिक कानून पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन

♦भारत टाइम्स♦

भीलवाड़ा। संगम विश्वविद्यालय, जिसे शिक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए जाना जाता है, के विधि विद्यालय ने 26 जुलाई, 2024 को नए आपराधिक कानून पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरूआत विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर प्रोफेसर डॉ. करुणेश सक्सेना द्वारा की गई, जिन्होंने छात्रों को संबोधित किया और कार्यशाला की महत्वपूर्णता पर चर्चा की। प्रो वाइस चांसलर प्रोफेसर डॉ. मानस रंजन पाणीग्रही ने छात्रों को प्रोत्साहित किया और उन्हें अध्ययन और उन्नति के लिए प्रेरित किया। रजिस्ट्रार प्रोफेसर डॉ. राजीव मेहता ने इस कार्यशाला को सफलता की दिशा में आगे बढ़ाने के लिए शुभकामनाएं दी। कार्यशाला में मुख्य अतिथि

श्री विशाल भार्गव, अतिरिक्त जिला नयायाधीश एवं सचिव , ज़िला विधिक सेवा प्राधिकरण ने छात्रों को नए अपराधिक कानून के बारे में संबोधित करते हुए न्यायिक प्रक्रिया में इन बदलावों के महत्व पर चर्चा की। कार्यशाला के विशिष्ट अथिति रिटायर्ड न्यायाधीश श्री शिव कुमार शर्मा ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) 2023 में हुए परिवर्तन पर छात्रों को मार्गदर्शन दिया। इस कार्यशाला में भीलवाड़ा बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अधिवक्ता ऋषि तिवारी ने भी नए कानूनों पर चर्चा की। इस कार्यशाला की पहली वक्ता डॉ. श्वेता सिंह, सिम्बायोसिस स्कूल ऑफ लॉ, पुणे से, ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) पर अपने विचार साझा किए। उनके व्याख्यान ने कानून की शिक्षा में नवाचार और सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण सुझाव दिए। दूसरी वक्ता डॉ. अनु सोलंकी, सुप्रीम कोर्ट की अधिवक्ता, ने भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) पर चर्चा की और न्याय प्रणाली में सुधार की दिशा में कई महत्वपूर्ण बिंदुओं को उजागर किया।

रास्ता रोककर ग्रामीणों ने किया प्रदर्शन

गाय की दुर्घटना में मौत के बाद

♦भारत टाइम्स♦

बोरुंदा सोहनलाल वैष्णव। कस्बे से जाने वाली घोड़ावट खवासपुरा मुख्य सड़क पर शुक्रवार प्रातः 7:30 बजे अज्ञात वाहन की टक्कर से एक गाय की मौत हो गई। इस घटना को लेकर ग्रामीणों ने मुख्य सड़क पर प्रदर्शन करते हुए जाम लगा दिया। जिसे घटना स्थल के दोनों तरफ करीब 1 किलोमीटर लंबी वाहनों की कतारें लग गई। सड़क पर लगे जाम से स्कूली बसें फंसने से विद्यार्थियों को भी कई परेशानियों का सामना करना पड़ा। ग्रामीणों ने सड़क निर्माण को लेकर ठेकेदार पर मन मानी करने का आरोप लगाते हुए अधूरे पड़े सड़क निर्माण कार्य को पूरा करने की मांग की। कई महीनों से सड़क पर गिट्टी के ढ़ेर पड़े रहने से और एक साइड में गहरी खाई होने पर आए दिन इस स्थान पर हादसे हो रहे है।

ग्रामीणों की सूचना पुलिस को दी जिस पर थानाधिकारी देवकिशन के निर्देश पर मुख्य आरक्षी सरोज मीणा मय पुलिस जाब्ता घटनास्थल पर पहुंचे। वही ग्रामीणों ने प्रशासन से सड़क निर्माण कार्य पुनः चालू करवाने तथा सड़क से गिट्टी हटाने व साइड मे बनी खाई को भरने की मांग की। पुलिस की समझाइस के बाद ग्रामीणों ने करीब 2 घंटे बाद जाम खोला। वहीं उपस्थित कई ग्रामीणों ने सड़क के दोनों और अतिक्रमण हटाने की भी मांग की। प्रदर्शन के दौरान उपस्थित ग्रामीणों ने सड़क निर्माण कार्य धीमी गति से चलने को लेकर भी रोष जताया।

दो दिवसीय संगीतमय रुकमणी मंगल कथा

♦भारत टाइम्स♦

चितौड़गढ़ (अमित कुमार चेचानी)। नानी बाई का मायरा महीला मण्डल, चंदेरिया की ओर से उपनगरीय क्षेत्र चंदेरिया में स्थित सर्वोदय साधना संघ मंदिर परिसर में आज से दो दिवसीय रुकमणी मंगल कथा होने जा रही है। कथा का वाचन श्री जी ऋतु वशिष्ठ दिल्ली के द्वारा किया जायेगा। सहआयोजक आस्था मित्र मण्डल ओर श्याम रस महोत्सव समिति के संयोजक अशोक भंडारी ने बताया की रात्रि 8 बजे से 11 बजे तक दो दिवसीय कथा में भगवान कृष्ण के बाल्यकाल से लेकर उनका रुकमणी से विवाह का प्रसंग होगा।28 जुलाई को कथा के समापन के पश्चात इन्दौर के प्रसिद्ध भाव भजन गायक भरत जी शर्मा के भजनों की प्रस्तुति होगी।

आवश्यकता

भारत टाइम्स न्यूज को रिपोर्ट्स ओर अनुभवी मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव की आवश्यकता है। यदि आप हमसे जुड़ना चाहते है तो अपना बॉयोडाटा हमे ईमेल करे।

Bharattimesnews01@gmail.com

Whatsapp

9509745147
9799911545

जोधपुर कृषि खंड की मासिक कार्यशाला आयोजित

कीट व्याधि सर्वे कर किसानों को समय पर उपयोगी जानकारी देवें : डा. मटोरिया

♦भारत टाइम्स♦

बोरुंदा सोहनलाल वैष्णव। शुक्रवार को कृषि अनुसंधान संस्थान केन्द्र मण्डोर के सभागार कक्ष में जोधपुर कृषि खंड मासिक कार्यशाला आयोजित हुई जिसमें कृषि अधिकारियों व कृषि विशेषज्ञों ने लिया भाग। इस कार्यशाला में खरीफ फसल बुवाई प्रगति, कीट रोग प्रकोप, माह अगस्त में खरीफ फसलों में किए जाने वाले सामयिक कार्यों, कृषि आदान उपलब्धता आदि पर विस्तृत चर्चा की गई। अतिरिक्त निदेशक कृषि विस्तार खण्ड जोधपुर डा. जी.आर.

मटोरिया ने विभागीय अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि अधिकारी नियमित खेतों पर भ्रमण कर कीट रोग प्रकोप का सर्वे करे व प्रभावी नियंत्रण करवाने के लिए किसानों को समय-समय सुझाव दें। विभागीय विभिन्न योजनाओं में भी आवंटित लक्ष्यानुसार तीव्र प्रगति सुनिश्चित करने हेतु भी निर्देश दिया। विभागीय सभी योजनाओं में किसानों को लाभान्वित कर प्रगति समय पर सुनिश्चित करें। फिल्ड स्टॉफ के अधिकारी क्षेत्र में नियमित भम्रण कर पौधसंरक्षण के उपाय समय-समय किसानों को सुझाव देने के कार्य को प्राथमिकता से करने हेतु विस्तार से चर्चा की।

डा.मटोरिया ने विभिन्न कृषि आदान कीटनाशी, उर्वरक, बीज की गुणवता सुनिश्चित करने के लिए नियमित आदान विक्रेताओं के प्रतिष्ठानों का निरीक्षण कर अधिक से अधिक नमूने आहरण करने हेतु आदान कृषि निरीक्षकों को निर्देशित किया। इस कार्यशाला में कृषि अनुसंधान केन्द्र के कृषि वैज्ञानिकों ने सभी अधिकारियों को माह अगस्त में खरीफ फसलों में किये जाने वाले समसामयिक कार्यों के बारे में प्रशिक्षण दिया।

मन ही मनुष्य के सुख और दुःख का मुख्य नियामक तत्व है: आचार्य विमलसागर सूरीश्वर

♦भारत टाइम्स♦

मैसूरु। आचार्य विमलसागर सूरीश्वर ने कहा कि मन ही मनुष्य के सुख और दुःख का मुख्य नियामक तत्व है। मन की गति निराली है। इस पर नियंत्रण नितांत आवश्यक है। जीवन में सुख या दुःख की कोई भी मात्रा हो, मन की मान्यता के मुताबिक ही उनका निर्धारण होता है। यदि वह सुखद क्षणों को अस्वीकार कर देता हैं तो तत्काल वे पल ही दुःखद बन जाते हैं। दुःख और सुख की मन की फिलोसोफी गजब की है। इसे समझकर ही हम सुख-शांति से जीने का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। जो मन के मुताबिक जीते हैं, वे कदम-कदम पर परेशान होते रहते हैं। नजरबाद स्थित शिक्षक सदन के

बुद्धि वीर वाटिका में दो हजार से अधिक जिज्ञासु श्रोताओं को चित्तवृत्तियों के निरोध पर मार्गदर्शन देते हुए जैनाचार्य ने आगे कहा कि मानसिक भूमिका पर दुर्विचार, दुश्चिंतन, दुर्भावनाओं को टालकर हम आध्यात्मिक साधना की योग्यता बना सकते हैं। जिनका मन नियंत्रण में नहीं होता, वे कभी बड़ी सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। क्रोध, अहंकार, माया, लोभ, राग, द्वेष, ईर्ष्या आदि भीतरी शल्य मन में निरंतर उमड़ती और जीवन को प्रभावित करती विविध भाव-तरंगे हैं। इन्हीं की चपेटों में अमूल्य जीवन डूब जाता है। जो आत्माएं इनसे बचकर उभरती हैं, वे पार लग जाती हैं। साधु-संत लोगों को पार लगाने आते हैं। धर्म और शास्त्र नाव हैं तथा साधु-संत नाविक की भूमिका निभाते हैं। जो सद्गुरु का हाथ पकड़ते हैं, वे कभी नहीं डूबते। कल्याण मित्र वषार्वास समिति के कांतिलाल चौहान ने बताया कि शुक्रवार को शत्रुंजय तपाराधना के सवेरे और शाम, दो बियासने हुए। बड़ी मात्रा में लोगों ने तपस्वियों की भक्ति की। अशोक दांतेवाडिया ने जानकारी दी कि सायंकाल को स्वयंसेवक-स्वयंसेविकाओं की मीटिंग का आयोजन हुआ। रात्रिकालीन ज्ञानसत्र में गणि पद्मविमलसागर ने बताया कि भगवान की पूजा से पहले भगवान के स्वरूप और गुणों को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। इससे भक्ति जीवंत बनेगी और पूजा का मर्म समझ मे आयेगा। प्रवचन सभा में रक्तदान महादान गौ-भक्त संगठन ट्रस्ट,मैसूरु के संरक्षक व पर्यावरण जागृति वैदिके बन्नूर के अध्यक्ष महेंद्र सिंह राजपुरोहित, संरक्षक पृथ्वी सिंह चांदावत, अध्यक्ष बगदाराम कुमावत, सचिव चिरंजीलाल कुमावत, पूर्व अध्यक्ष देवेंद्र परिहारिया, करमाराम सीरवी, गुदड़राम, महेंद्र चौयल, मोहनराम आदि ने भाग लेकर आचार्य के दर्शन वंदन कर सुखसाता पूछ कर आशीर्वाद लिया।

मदन राठौड के प्रदेशाध्यक्ष बनने पर हर्ष की लहर छाई

♦भारत टाइम्स♦

बगड़ीनगर। भारतीय जनता पार्टी के राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष पद पर राज्य सभा सदस्य मदन राठौड की नियुक्ति का क्षेत्र के भाजपा कार्यकताओं ने स्वागत किया हैं। भाजपा ओबीसी मोर्चा प्रदेश कार्य समिति सदस्य किशनलाल सोनी, भाजपा व्यापार प्रकोष्ठ के पूर्व जिला संयोजक राजेन्द्र पोकरना, पंचायत समिति सदस्य अनिल व्यास,भाजपा नेता नारायणलाल गुर्जर, कालू मेवाड़ा, कुंदनसिंह पंवार, दिलीप खांटेड, युधिष्ठिर शर्मा,महेंद्र मेवाड़ा, गुमानराम सैणचा व डी के देवासी सहित कई कार्यकताओं ने मदन राठौड को भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मनोनीत किए जाने पर खुशी जाहिर करते हुए संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा व राष्ट्रीय महासचिव अरुणसिंह सहित संगठन के सभी शीर्ष नेताओं का आभार जताया।

राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना जिलाध्यक्ष के नेतृत्व में दिया ज्ञापन

♦भारत टाइम्स♦

फिरोज खान सिरोही। रेवदर राष्ट्रीय करणी सेना की कार्यकारी अध्यक्ष शीला सुखदेव सिंह गोगामेड़ी को जान से मारने की मिली धमकी के विरोध में करणी सैनिकों ने मुख्यमंत्री के नाम जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौपा। जिसमें बताया की 5 दिसंबर 2023 को राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुखदेव सिंह गोगामेड़ी की हत्या कर दी गई थी। उसके बाद से लगातार उनकी पत्नी व सेना की कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष शीला सुखदेव सिंह गोगामेड़ी को जान से मारने की धमकी मिल रही है। सुखदेव सिंह गोगामेड़ी की हत्या के बाद जिन मुद्दों को लेकर परिजनों व सरकार के बीच 9 मांगों का समझौता हुआ था, उन मांगों को भी आज तक राज्य सरकार द्वारा पूरा नहीं किया गया है। 20 जुलाई 2024 को भी एक विदेशी नंबर से शीला सुखदेव सिंह गोगामेड़ी को जान से मारने की धमकी आई है। हम सरकार से निवेदन करते हैं कि संपूर्ण मांगों को तुरंत प्रभाव से पूरा किया जाए, व शीला सुखदेव सिंह गोगामेड़ी को अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान की जाए, जिससे कि हम संगठन व समाज का कार्य कर सकें। जिला अध्यक्ष सुजान सिंह वडवज, जिला सचिव हरीसिंह देवड़ा रेवदर, टोकरा बांध अध्यक्ष भरत सिंह, पिथापुरा ,जिला उपाध्यक्ष लक्ष्मण सिंह पोसितरा, अजीत सिंह निंबोड़ा ,महेंद्र सिंह जालमपुरा, नेनसिह वडवज ,तहसील अध्यक्ष भीम सिंह सनवाडा, गोपाल सिंह मगरीवाडा ,हडमत सिंह मगरीवाडा सहीत करणी सेना के पदाधिकारि मोजूद थे।

स्वास्थ्य अधिकारी हंसा चौधरी की हर हाथ पौधा मुहिम ला रही रंग

♦भारत टाइम्स♦

गोटन दिनेश चौधरी। पर्यावरण प्रेमी हंसा चौधरी इन दिनों डेगाना और रियांबड़ी उपखण्ड क्षेत्र के हर गांव में पौधे वितरण कर पौधारोपण करवा रही है। इस वर्ष उनका लक्ष्य है कि इस मुहिम में 10,000 पौधे लगाएं जाये जिससे हरा-भरा राजस्थान और राजस्थन के मुख्यमंत्री की ₹एक पेड़ मां के नाम मिशन के तहत हर व्यक्ति पौधा लगाएं। साथ ही उन्होंने बताया कि प्रकृति अपरिहार्य है सम्भावनाएं अन्नत है तो क्यों ना हमें भी मिल के प्रकृति के लिए कुछ अच्छा करना चाहिए। इस मिशन की शुरूआत उन्होंने अपने ससुराल बग्गड़ और पीहर रामसरी से की है जिसके तहत उन्होंनें अभी बग्गड, बवरला, तिलानेश, रामसरी, नथावड़ा, हिम्मतनगर, जालसू गावों में गौशाला, शमशान और विद्यालयों में पौधेरोपण करवाया है । हंसा ने बताया कि अभी उसका यह मिशन लगातार चल रहा है।

सभी गांव के युवाओं और ग्रामवासियों का भरपुर समर्थन मिल रहा है। जिससे लोग पौधा लगाने को अपनी जिम्मेदारी समझ रहें हैं। कौन हैं हंसा चौधरी :- बग्गड़ गांव के निवासी सोमाणी चौधरी की पुत्र वधु हंसा चौधरी वर्तमान में सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी जालसू में पदस्थापित है यह स्वास्थ्य रक्षा के लिए महिलाओं को निःशुल्क सैनेट्री पेड भी वितरित करती है साथ ही घुड़सवार भी है। अपने पिताजी हरीश चौधरी का रामसरी में घोड़ों का फन 21 स्टड फार्म है तो यहा बेखूबी घुड़सवारी भी करते हैं। सोशल मिडिया पर भी वन्य जीवों और बेजुबानों के सरक्षण के लिए प्रयास भी करती है। **किससे मिली प्ररेणा:-** हंसा चौधरी तीसरी पीढ़ी भारतीय सेना में रही है और वर्तमान में है दादा स्व. चौधरी रामलाल सूबेदार थे, पिता हरीश चौधरी रिटा. सुबेदार, चाचा खेमराज चौधरी भारतीय सेना में कमाण्डिंग ऑफीसर व भाई ओमप्रकाश चौधरी वर्तमान में भारतीय सेना में कार्यरत है। तथा पिता ,ससुर सोमाणी पोषक और पति बी .आर. चौधरी की प्रेरणा से पर्यावरण के सरक्षण के लिए हर हाथ पौधा की मुहिम शुरू की तथा अब तक आस पास के एक दर्जन गांवो व निजी शिक्षण संस्थानो मे बच्चो के पर्यावरण के प्रति जागरूक कर 5000 पौधे निःशुल्क वितरण कर चुकि है। तथा लक्ष्य के तहत रविवार को सुबह से देर शाम तक चार गांवों बग्गड़, रामसरी, जलवाना और नथावड़ी में पर्यावरण प्रेमी पद्मश्री हिम्मताराम भांभू के नेतृत्व में 300 पौधों का रोपण और 700 पौधों का वितरण किया गया। तथा 4000 ओर वितरण कर 10000 का लक्ष्य इस मानसून काल मे पूरा करेगी। आगे भी सामाजिक सरोकार बेटी- पढाओ, बेटी-बचाओ में लगातार प्रयास कर रही है। हंसा बताती कि इस हर हाथ पौधा मिशन के बाद वह 1000 यूनिट रक्तदान का लक्ष्य लेकर एक बड़े रक्तदान शिविर का आयोजन करगी। क्योंकि वह खुद एक स्वास्थ्य अधिकारी है तथा उसका मानना है कि विज्ञान कितनी भी प्रगति कर लें खून बनाने की मशीन नही बना सकती इसलिए इंसान ही इंसान के काम आता है। किसी को भी ब्लड की जरूरत होती है तो सोशल मिडिया के माध्यम से तथा नागौर जिला क्लेक्टर रहे कअर जितेंद्र सोनी के रक्तकोष संस्थान की सदस्य होने के नाते प्रयास कर के उसे पूरा किया जाता है।

सीरवी समाज होसूर वडेर में सात दिवसीय एक्युप्रेशर शिविर शुरू

♦भारत टाइम्स♦

होसूर। सीरवी समाज होसूर के बडेर भवन मे श्री आईमाताजी के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर आईमाताजी की आरती के साथ ही शुक्रवार से एक्युप्रेशर शिविर का शुभारंभ हुआ। शिविर के प्रति लोगो मे काफी उत्साह था। डॉ राम मनोहर लोहिया आरोग्य जीवन संस्थान दल के के सदस्यो ने व्यवस्था को निहारा,सराहा और समस्त प्रवासी बंधुओ की उपस्थिति मे लोगो के उपचार करना शुरू किया। श्री सीरवी समाज होसूर संस्था के कोषाध्यक्ष भरतलाल बर्फा ने बताया कि यह चिकित्सा पद्धति बहुत ही कारगर है जो पुराने से पुराने रोगो को खत्म कर देती है,उपाध्यक्ष भुराराम गहलोत ने जानकारी दी कि जन हित को ध्यान मे रखते हुए शिविर सुबह 8बजे से 12 बजे एवं शाम 4बजे से 8बजे तक सात दिन चलेगा। डॉ रुपेस चौधरी ने नर सेवा नारायण सेवा को मानव धर्म बताया और इसे सर्वोपरी बताया। कार्यक्रम मे उपाध्यक्ष भुराराम गहलोत, कोषाध्यक्ष भरतलाल बर्फा सूचना मंत्री लक्ष्मणराम परिहारिया , पेमाराम आगलेचा ,सुखलाल मुलेवा, कुनाराम सैणचा, केवलराम आगलेचा, चंपालाल सोलंकी, दलाराम गहलोत, सुरेशचन्द आदि सदस्य उपस्थित थे।

रामदेव मंदिर में करमाबाई कथा सुनकर भाव -विभोर हुए श्रद्धालु

♦भारत टाइम्स♦

बेंगलूरू। मागड़ी रोड अग्रहारा दासरहल्ली स्थित रामदेव प्रार्थना मंदिर में चातुर्मास विराजित संत शीतल राजाराम महाराज ने बताया कि करमा बाई मारवाड़ की मीरा कही जाती हैं। वह भगवान श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त थीं और भगवान कृष्ण ने उन्हें साक्षात दर्शन दिए थे। इनका जन्म राजस्थान के नागौर जिले की मकराना तहसील के गांव कालवा निवासी जीवनराम डूडी के घर 1615 में बेटी के रूप में हुआ था। जीवन राम को यह पुत्री भगवान से मन्नतें मांगने पर मिली थी। इसीलिए इनका नाम करमा रखा गया। करमा के 13 साल की उम्र में उनके माता पिता तीर्थ को गए। भगवान को भोग लगाने के लिए वह करमा को घर छोड़ गए। करमा के आग्रह पर भगवान भोग ग्रहण करने आए। इसी तरह उन्होंने करमा को दर्शन दिए। जीवन के अंतिम दिनों में करमा बाई भगवान जगन्नाथ की नगरी में रहने लगीं। आरती प्रसाद के लाभार्थी अनील सैणचा रहे। मूलाराम गुर्जर, रमेश सेट, प्रेमबाई सीरवी, कमलाबाई प्रजापत ने व्यवस्था में सहयोग दिया।

केंद्र बजट में कुछ नहीं मिला संसदीय क्षेत्र को :- देवल

♦भारत टाइम्स♦

फिरोज खान सिरोही। वरिष्ठ कांग्रेस नेता हिमपाल सिंह देवल ने बताया कि केंद्र सरकार द्वारा जारी किया गया बजट सिर्फ आश्वासनों से भरा बजट है एवं पूर्व में जारी किए गए बजट की घोषणा भी आज तक पूर्ण नहीं हो पाई ऐसे में या मात्र छलावा पूर्ण बजट माना जाता है कांग्रेस नेता देवल ने केंद्र के बजट को लेकर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए उन्होंने बताया कि केंद्र में और राज्य में भाजपा की सरकार है एवं डबल इंजन सरकार बनी हुई है लेकिन आज यहां पर सिस्टम खराब हो चुका है एवं राज्य सरकार ने पूर्व कांग्रेस सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को भी बंद करके जनता के साथ धोखा किया है उन्होंने बताया

कि वर्तमान में जालौर सिरोही संसदीय क्षेत्र से चुनाव के दौरान भाजपा नेताओं ने जालौर सिरोही के विकास के लिए काफी दावे किए थे लेकिन इस बजट के दौरान इस क्षेत्र का नाम तक सुनने को नहीं मिला यहां की जनता को विकास के नाम पर कोई उपलब्धि नहीं मिली देवल ने बताया कि क्षेत्र में हवाई यात्रा चालू करने एवं माही परियोजना को जोड़कर लागू करने जालौर सिरोही एवं सांचौर को नेशनल हाईवे से जोड़ने एवं लंबे समय से किसानों की मांग के आधार पर मंडी स्थापना करने जैसी कई समस्याओं को लेकर बजट में कोई जगह नहीं मिली जालौर सिरोही संसदीय क्षेत्र के साथ केंद्र सरकार ने धोखा किया देवल ने उक्त बजट को मात्र आश्वासन का बजट करार देते हुए कहा कि पूर्व में युवाओं को रोजगार देने की घोषणा की गई थी लेकिन आज दिन तक घोषणा के अनुसार रोजगार नहीं दिया गया आज वापस बजट में रोजगार देने की बात की जा रही है जो कि बेरोजगार युवाओं के लिए मजाक बन गई है।

रामस्नेही संतों ने किया वृक्षारोपण

♦भारत टाइम्स♦

बोरुंदा सोहनलाल वैष्णव। राम धाम खेड़ापा द्वारा संचालित सेठ राम सुख राठी उच्च माध्यमिक विद्यालय खेड़ापा में शुक्रवार को पौधरोपण करते हुए उनकी देखभाल करने का संकल्प लिया। रामधाम खेड़ापा के रामस्नेही संत केशवदास शास्त्री ने कहा कि वृक्ष धरती के श्रृंगार है इन्हें अधिक से अधिक लगाकर पर्यावरण संतुलन के साथ धरती का श्रृंगार बनाए रख सकते है। युवा संत कल्याणदास मादलिया ने कहा कि प्रत्येक वृक्ष लगाने वाले व्यक्ति को पेड़ लगाने के साथ-साथ उनकी सुरक्षा व सार सम्भाल भी करनी चाहिए। इस दौरान संत रामविलास, संत मोहनदास व संत दीपाराम सहित कई विद्यार्थी उपस्थित रहे। इस दौरान आधा दर्जन से अधिक बरगद, पीपल, नीम, खारी बादाम व निम्बू सहित विभिन्न किस्म के छायादार पेड़ लगाए गए।

ग्राम विकास अधिकारी का अभिनंदन किया

♦भारत टाइम्स♦

बोरुंदा सोहनलाल वैष्णव। बोरुंदा ग्राम पंचायत कार्यालय में शुक्रवार को नए आए ग्राम विकास अधिकारी भजनलाल विश्नोई का स्वागत किया वहीं यहां से स्थानांतरण होकर गए ओमप्रकाश सोलंकी का भी अभिनंदन किया। ग्राम पंचायत कार्यालय में शुक्रवार को करीब 3 वर्षों तक सेवाएं देने वाले ग्राम विकास अधिकारी ओमप्रकाश सोलंकी का अन्यत्र स्थानांतरण होने पर अभिनंदन किया गया वहीं नए आए ग्राम विकास अधिकारी भजनलाल बिश्नोई ने कार्यभार ग्रहण किया तो उनका भी लोगों ने स्वागत किया। इस दौरान पूर्व सरपंच हनुमानसिंह राठौड़, सरपंच संतोष दाधीच, ग्राम सेवा सहकारी के विक्रमसिंह, समिति उपाध्यक्ष प्रकाश भंवरिया, वार्डपंच बक्साराम कच्छावा, वार्डपंच हरिसिंह भाटी, उप सरपंच अब्दुल वहीद कुरैशी,

छोटूराम, पुकदान, भागीरथ सुथार, वार्डपंच जगदीश जीनगर, यशराज दाधीच, वार्ड पंच डुंगरराम मेघवाल, पटवारी नैनाराम खोजा, जाट समाज अध्यक्ष गोपाराम भंवरिया, मंगराज शर्मा, रामकिशोर, महेश दाधीच, ऊंकारराम बेलदार व राजेंद्र नाथ सहित कई ग्रामीणों ने अन्यत्र स्थानांतरण हुए ओमप्रकाश सोलंकी को माला व साफा पहनाकर कर अभिनंदन किया वहीं नए आए ग्राम विकास अधिकारी भजनलाल विश्नोई को भी साफा पहनाकर स्वागत किया।

आज भी याद आते हैं डॉ. कलाम

डॉ. कलाम ने राष्ट्रपति पद के दरवाजे ना केवल आम आदमी के लिए ही नहीं खोले बल्कि समाज के हर तबके को अपने साथ जोड़ने की कोशिश की। अपनी सादगी से उन्होंने पूरे देश की जनता का दिल जीता

सपने वो नहीं होते जो आपको रात में नींद में आएं लेकिन सपने वे होते हैं जो रात में सोने ना दें। ऐसी बुलंद सोच और अग्नि सरीखी ऊँची उड़ान रखने वाले मिसाइलमैन कलाम ही थे जिन्हें जनता कला राष्ट्रपति यूँ ही नहीं कहा जाता था। अपने राष्ट्रपति पद के 5 बरस के कार्यकाल में डॉ. अवुल पकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम ने अन्य राष्ट्रपति के कार्यकालों के मुकाबले न केवल अमिट छाप छोड़ी बल्कि ऐसी मिसाल भारतीय राजनीती में दूर -दूर तक देखने को नहीं मिलती। डॉ. कलाम ने राष्ट्रपति पद के दरवाजे ना केवल आम आदमी के लिए ही नहीं खोले बल्कि समाज के हर तबके को अपने साथ जोड़ने की कोशिश की। अपनी सादगी से उन्होंने पूरे देश की जनता का दिल जीता। डॉ. कलाम की शख्सियत ही यूँ थी कि हर कोई उनका मुरीद हो जाता था। राष्ट्रपति पद पर रहते हुए भी वह आम इंसान की तरह सादगी में रहते थे। वह देश के वह सम्मानित व्यक्तियों में से एक थे जिन्होंने एक वैज्ञानिक और एक राष्ट्रपति के रूप में अपना अतुल्य योगदान देकर देश सेवा की। राष्ट्रपति पद पर अपना कार्यकाल पूरा करने के बाद से डॉ. कलाम शिलांग, अहमदाबाद और इंदौर के भारतीय प्रबंधन संस्थानों तथा देश एवं विदेश के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में अतिथि प्रोफेसर के रूप में कार्यरत थे। डॉ. कलाम ने राष्ट्राध्यक्ष रहते हुए राष्ट्रपति भवन के दरवाजे आम जन के लिए खोल दिए जहां बच्चे उनके विशेष अतिथि होते थे। 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम में पैदा हुए कलाम ने मद्रास इंस्टीट्यूट आफ

टेक्नोलोजी से स्नातक करने के बाद भौतिकी और एयरोस्पेस इंजीनियरिंग का अध्ययन किया और फिर उसके बाद रक्षा शोध एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) से जुड़ गए। उनका बचपन भी बड़ा संघर्ष पूर्ण रहा।प्राइमरी स्कूल के बाद कलाम ने श्वाट्र्ज हाईस्कूल, रामनाथपुरम में प्रवेश लिया। वहां की शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने 1950 में सेंट जोसेफ कॉलेज, तिरुचिन्नापल्ली में प्रवेश लिया। वहां से उन्होंने भौतिकी और गणित विषयों के साथ बीएससी की डिग्री प्राप्त की। अपने अध्यापकों की सलाह पर उन्होंने स्नातकोत्तर शिक्षा के लिए मद्रास इंस्टीयट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, चेन्नई का रुख किया। वहां पर उन्होंने एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग का चयन किया। कलाम की इच्छा थी कि वे वायु सेना में भर्ती हों तथा देश की सेवा करें। यह इच्छा पूरी न हो पाने पर उन्होंने बे-मन से रक्षा मंत्रालय के तकनीकी विकास एवं उत्पाद का चुनाव किया। वहां पर उन्होंने 1958 में तकनीकी केन्द्र सिविल विमानन में वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक का कार्यभार संभाला। उन्हीं दिनों इसरो में स्वदेशी क्षमता विकसित करने के उद्देश्य से उपग्रह प्रक्षेपण यान कार्यक्रम की शुरूआत हुई। कलाम को इस योजना का प्रोजेक्ट डायरेक्टर नियुक्त किया गया जिसे उन्होंने अंजाम तक पहुंचाया। जुलाई 1980 में रोहिणी उपग्रह को पृथ्वी की कक्षा के निकट स्थापित करके भारत को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष क्लब के सदस्य के रूप में स्थापित कर दिया। डॉ. कलाम ने भारत को रक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्यद से रक्षामंत्री के तत्कालीन वैज्ञानिक सलाहकार डॉ. वीएस अरुणाचलम के मार्गदर्शन में इंटीग्रेटेड गाइडेड मिसाइल डेवलपमेंट प्रोग्राम की शुरूआत की। इस योजना के अंतर्गत त्रिशूल आकाश, नाग, अग्नि एवं ब्रह्मोस मिसाइलें विकसित हुई। डॉ. कलाम ने जुलाई 1992 से दिसम्बर 1999 तक रक्षा मंत्री के विज्ञान सलाहकार तथा डीआरडीओ के सचिव के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान कीं। उन्होंने भारत को सुपर पॉवर बनाने के लिए 11 मई और 13 मई 1998 को सफल परमाणु परीक्षण किया। इस प्रकार भारत ने परमाणु हथियार के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण सफलता अर्जित की और यह डॉ रणनीति थी पोकरण विस्फोटों की भनक अमरीका तक को नहीं लगी और परीक्षण सफल हुआ। डॉ. कलाम नवम्बर 1999 में भारत सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार रहे और फिर 25 जुलाई 2002 को भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति के रूप में निर्वाचित हुए। वे 25 जुलाई 2007 तक इस पद पर रहे और उनको राष्ट्रपति बनाने में नेताजी ने मास्टर स्ट्रोक उस दौर में चला था जब वामपंथी और विपक्ष एनडीए के इस फैसले के साथ गया था। 2012 में सबसे पहले नेताजी ने तृणमूल कांग्रेस की नेता ममता बनर्जी के साथ कलाम पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम को राष्ट्रपति बनाने की बात सामने रखी थी लेकिन कांग्रेस की पसंद प्रणव मुखर्जी थे और वह कलाम के साथ नहीं थी। डॉ कलाम को कार्यकाल की कोई चाह नहीं थी लेकिन करोडों प्रशंसकों का दिल उन्होने नहीं तोड़ा और अपने दूसरे कार्यकाल के चयन पर सभी दलों की सम्मति को जरूरी बताया लेकिन कांग्रेस शायद उन्हें दूसरा कार्यकाल न बना चुकी थी। उनकी जीवनी विंग्स ऑ फायर भारतीय युवाओं और बच्चों के बीच बेहद लोकप्रिय है। डॉ. कलाम की लिखी पुस्तकों में गाइडिंग सोल्स : डायलॉग्स ऑन द पर्पज ऑफ लाइफ एक गंभीर कृति है। इनके अतिरिक्त उनकी अन्य चर्चित पुस्तकें इग्नाइटेड माइंड्स : अनलीशिंग द पॉवर विदिन इंडिया एनिवजनिंग अन एमपार्वड नेशन : टेक्नोलॉजी फॉर सोसायटल ट्रांसफारमेशन, डेवलपमेंट्स इन फ्ल्यूड मैकेनिक्सि एण्ड स्पेस टेक्नालॉजी, 2020: ए विजन फॉर द न्यू मिलेनियम सह लेखक- वाईएस राजन, इनिवजनिंग ऐन इम्पॉएर्वड नेशन : टेक्नोलॉजी फॉर सोसाइटल ट्रांसफॉरमेशन सह लेखक- ए सिवाथनु पिल्ललई बेस्टसेलर रही हैं। डॉ. कलाम ने तमिल भाषा में कविताएं भी लिखी जो अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। उनकी कविताओं का एक संग्रह द लाइफ ट्री के नाम से अंग्रेजी में भी प्रकाशित हुआ है।। डॉ. कलाम की योग्यता के दृष्टिगत सम्मान स्वरूप उन्हें अन्ना यूनिर्वसिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, कल्याणी विविद्यालय, हैदराबाद विविद्यालय, जादवपुर विविद्यालय, बनारस हिन्दू विविद्यालय, मैसूर विविद्यालय, रूड़की विविद्यालय, इलाहाबाद विविद्यालय, दिल्ली विविद्यालय, मद्रास विविद्यालय, आंध्र विविद्यालय, भारतीदासन छत्रपति शाहूजी महाराज विविद्यालय, तेजपुर विविद्यालय, कामराज मदुरै विविद्यालय, राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विवि आईआईटी दिल्ली, आईआईटी मुंबई, आईआईटी कानपुर, बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलाजी, इंडियन स्कूल ऑफ साइंस, सयाजीराव ऑफ बड़ौदा, मनीपाल एकेडमी ऑफ हॉयर एजुकेशन ने अलग-अलग डॉक्टर ऑफ साइंस की मानद उपाधियां प्रदान की। जवाहरलाल नेहरू टेक्नोलॉजी विवि हैदराबाद ने उन्हें पीएचडी तथा विश्वभारती शान्ति निकेतन और डॉ. बाबा साहब भीमराव अंबेडकर विविद्यालय औरंगाबाद ने उन्हें डॉक्टर ऑफ लिटरेचर की मानद उपाधियां प्रदान कीं। इनके साथ वे इंडियन नेशनल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग, इंडियन एकेडमी ऑफ साइंसेज बेंग्लुरू, नेशनल एकेडमी ऑफ मेडिकल साइंस नई दिल्ली के सम्मानित सदस्य, एरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया, इंस्टीट्यूशन ऑफ इलेक्ट्रानिक्स एंड टेलीकम्यूनिकेशन इंजीनियर्स के मानद सदस्य, इजीनियरिंग स्टॉफ कॉलेज ऑफ इंडिया के प्रोफेसर तथा इसरो के विशेष प्रोफेसर रहे। डॉ कलाम को नेशनल डिजाइन अवार्ड-1980 (इंस्टीटयूशन ऑफ इंजीनियर्स भारत), डॉ. बिरेन रॉय स्पेस अवार्ड-1986 (एरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया), ओम प्रकाश भसीन पुरस्कार, राष्ट्रीय नेहरू पुरस्कार-1990 (मध्य प्रदेश सरकार), आर्यभट्ट पुरस्कार-1994, प्रो. वाई नयूडम्मा मेमोरियल गोल्ड मेडल-1996, जीएम मोदी पुरस्कार-1996, एचके फिरोदिया पुरस्कार-1996, वीर सावरकर पुरस्कार-1998 आदि। उन्हें राष्ट्रीय एकता के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार (1997) भी प्रदान किया गया। भारत सरकार ने उन्हें क्रमशः पद्म भूषण (1981), पद्म विभूषण (1990) एवं भारत रत्न सम्मान (1997) से भी विभूषित किया गया। राष्ट्रपति के रूप में कलाम की पहचान अलहदा थी। अपनी अनोखी संवाद शैली के चलते कलाम अपने भाषणों में बच्चों को हमेशा शामिल करते थे। व्याख्यान के बाद वह अक्सर छात्रों से उन्हें पत्र लिखने को कहते थे और प्राप्त होने वाले संदेशों का हमेशा तुरंत जवाब देते थे। वीआईपी की परम्पराओं को तोड़कर हर बार मंच से नीचे उतरकर हाथ मिलाने थे। अपने कार्यकाल में लाभ के पद संबंधी विधेयक को मंजूरी देने से इनकार करके यह साबित कर दिया था कि वह एक रबर स्टैम्प नहीं हैं। इतना कुछ होने के बाद भी बतौर राष्ट्रपति अपने कार्यकाल में कई आलोचना का भी सामना करना पड़ा। डॉ. कलाम ने अपने पांच साल के कार्यकाल में 21 में से केवल एक दया याचिका पर कार्रवाई की और बलात्कारी धनंजय चटर्जी की याचिका को नामंजूर कर दिया जिसे बाद में फांसी दी गई। यही नहीं उन्होंने संसद पर आतंकवादी हमले में दोषी करार दिए जाने के बाद मौत की सजा पाने का इंतजार कर रहे अफजल गुरु की दया याचिका पर फैसला लेने में देरी को लेकर अपने आलोचकों को जवाब दिया और कहा कि उन्हें सरकार की ओर से कोई दस्तावेज नहीं मिला जिसके चलते वह कुछ कदम नहीं उठा सके। बिहार में वर्ष 2005 में राष्ट्रपति शासन लगाने के विदेश से लिए गए अपने विवादास्पद फैसले पर भी उनको आलोचनाओं का सामना करना पड़ा था। हालांकि उन्होंने यह कहते हुए आलोचनाओं को खारिज कर दिया कि उन्हें कोई अफसोस नहीं है। वह राष्ट्रपति पद से रिटायर और टायर्ड नहीं हुए। तकरीबन 300 से भी ज्यादा कालेजों और स्कूल में वह अपना लेक्चर देने गए। उनके जीवन में 2011 में एक मौका ऐसा भी आया जब अमरीका के एयरपोर्ट में पूर्व राष्ट्रपति होने के बाद भी सघन तलाशी ली गयी जहाँ उनके कपड़े उतारे जाने की घटना से पूरा देश आहत हुआ था लेकिन डॉ. कलाम ने इस पर कुछ भी नहीं कहा। यह उनकी महानता और जीवटता थी जो उन्हें महामहिम सरीखे शिखर पर ले गई और हमेशा आम इंसान की तरह बेरोकटोक अपना काम समर्पित भाव से करते रहे। डॉ.कलाम ने अपने कार्यकाल में कई राजसी परम्पराओं को तोड़ा। महामहिम होते भी वह सादा जीवन थे। पूरा देश मानो उनका परिवार था। चाचा नेहरू के बाद इस जेनरेशन के बच्चों के लिए कलाम ही आईकन थे। बच्चों से खुलकर बातें करना, उनको पढ़ाना बहुत अच्छा लगता था और संयोग देखिये शिलांग में 27 जुलाई 2015 की शाम डॉ. कलाम भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलोंग में एक व्याख्यान दे रहे थे तब दिल का दौर पड़ने से वे बेहोश हो कर गिर पड़े जिससे उनकी साँसों की डोर थम गई और पूरा देश महान वैज्ञानिक के निधन से शोक संतप्त हो गया।

अब इंग्लैंड और अमेरिका भी चखेगा कालानमक का स्वाद, वढ सरकार द्वारा डऊडढ घोषित होने के बाद बढ़ी खुश्बूदार चावल की मांग

कालानमक धान को केंद्र में रखकर पिछले दो दशक से काम कर रही गोरखपुर की संस्था पीआरडीएफ (पार्टिसिपेटरी रूरल डेवलपमेंट फाउंडेशन) के चेयरमैन पदमश्री डा आरसी चौधरी के अनुसार पिछले दो वर्षो के दौरान उनकी संस्था ने सिंगापुर को 55 टन और नेपाल को 10 टन कालानमक चावल का निर्यात किया। पढ़िए जनसत्ता रिपोर्ट मजहर आजाद की रिपोर्ट अमेरिका एक्सपोर्ट किया जाएगा कालानमक चावल अब इंग्लैंड और अमेरिका भी खुश्बूदार कालानमक चावल का स्वाद चखेगा। करीब सात दशक बाद कालानमक चावल इंग्लैंड और पहली बार अमेरिका जाएगा। इसके पहले नेपाल, सिंगापुर, जर्मनी, दुबई आदि देशों को भी कालानमक चावल का निर्यात किया जा चुका है। उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार द्वारा एक जिला, एक उत्पाद (ओडीओपी) घोषित करने के बाद इस चावल की मांग अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ गई है। इंग्लैंड तो कालानमक के स्वाद और सुगंध का मुरीद रह चुका है। बात सात दशक पुरानी है, तब देश भर में अंग्रेजों के बड़े-बड़े फार्म हाउस हुआ करते थे। ये इतने बड़े होते थे कि इनके नाम से उस क्षेत्र की पहचान जुड़ जाती थी। मसलन बर्डघाट, कैंपियरगंज आदि। सिद्धार्थनगर भी इसका अपवाद नहीं था। उस समय सिद्धार्थनगर में अंग्रेजों के फार्म हाउसेज में कालानमक धान की बड़े पैमाने पर खेती होती थी। अंग्रेज कालानमक के स्वाद और सुगंध से वाकिफ थे। इन खूबियों के कारण इंग्लैंड में कालानमक के दाम भी अच्छे मिलते थे। तब

जहाज से चावल इंग्लैंड को जाते थे। अमेरिका को भी 5 कुंतल चावल का निर्यात होगा करीब सात दशक पहले जमींदारी उन्मूलन के बाद यह सिलसिला कम होता गया। आजादी मिलने के बाद खत्म ही हो गया। इस साल पहली बार इंग्लैंड को 5 कुंतल चावल निर्यात किया जाएगा। इसी क्रम में पहली बार अमेरिका को भी 5 कुंतल चावल का निर्यात होगा। क्या यूपी में बदला जाएगा सीएम? बीजेपी में खींचतान के बीच यूपी इखढ चीफ ने दिया बड़ा बयान उल्लेखनीय है कि जबसे योगी सरकार ने कालानमक धान को सिद्धार्थनगर का एक जिला एक उत्पाद (ओडीओपी) घोषित किया है तबसे देश और दुनिया में स्वाद व सुगंध में बेमिसाल और पौष्टिकता में परंपरागत चावलों से बेहतर कालानमक धान के चावल की मांग बढ़ रही है। जीआइ मिलने से इसका दायरा भी बढ़ा है। सरकार ने इसे सिद्धार्थनगर का ओडीओपी घोषित करने के साथ इसकी खूबियों की जबरदस्त ब्रांडिग भी की है। फलतः उपज और मांग में वृद्धि हुई है। राज्यसभा में 17 दिसंबर 2021 को दिए गए आंकड़ों के अनुसार 2019/2020 में कालानमक का निर्यात 2 फीसद था। अगले साल यह बढ़कर 4 फीसद हो गया। 2021/2022 में यह 7 फीसद रहा। कालानमक धान को केंद्र में रखकर पिछले दो दशक से काम कर रही गोरखपुर की संस्था पीआरडीएफ (पार्टिसिपेटरी रूरल डेवलपमेंट फाउंडेशन) के चेयरमैन पदमश्री डा आरसी चौधरी के अनुसार पिछले दो वर्षो के दौरान उनकी संस्था ने सिंगापुर को 55 टन और नेपाल को 10 टन कालानमक चावल का निर्यात किया। इन दोनों देशों से अब भी लगातार मांग आ रही है। इसके अलावा कुछ मात्रा में दुबई और जर्मनी को भी इसका निर्यात हुआ है। पीआरडीएफ के अलावा भी कई संस्थाएं कालानमक चावल के निर्यात में लगीं हैं।

संपादकीय

पहले भी योगी जी के साथ था, अब भी हूं, खुद को जान का खतरा बताने वाले विधायक ने बयान जारी कर कही ये बात

उत्तर प्रदेश की कैंपियरगंज विधानसभा सीट से फतेह बहादुर सिंह विधायक हैं और वह पूर्व मुख्यमंत्री वीर बहादुर सिंह के बेटे हैं। फतेह बहादुर सिंह ने योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की। उत्तर प्रदेश के भाजपा विधायक फतेह बहादुर सिंह पिछले कुछ समय से काफी चर्चा में हैं। उन्होंने अपनी जान को खतरा बताया है। उत्तर प्रदेश की कैंपियरगंज

विधानसभा सीट से फतेह बहादुर सिंह विधायक हैं और वह पूर्व मुख्यमंत्री वीर बहादुर सिंह के बेटे हैं। पहले तो उन्होंने कहा कि मेरी हत्या की साजिश रची जा रही है। वहीं अब उन्होंने एक पत्र लिखकर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में आस्था प्रकट की है। फतेह बहादुर सिंह ने पत्र जारी कर कहा, हाल ही में कथित तौर पर कुछ व्यक्तियों द्वारा मेरी जान-माल का खतरा बताया गया। इसकी प्रशासन द्वारा उच्च स्तरीय जांच एसटीएफ से कराई जा रही है। हालांकि अभी तक उसकी पुष्टि नहीं हो पाई है। मैं जांच से पूरी तरह संतुष्ट हूं। व्यक्तिगत रूप से मैं पहले भी मुख्यमंत्री जी के साथ था और अभी भी हूं। मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि मुझे पिछले 5 वर्षों से वाई प्लस की सुरक्षा मुख्यमंत्री जी की ओर से उपलब्ध कराई गई है। फतेह बहादुर सिंह ने कहा, मैं माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज में पूरी तरह से निष्ठा और आस्था के साथ विश्वास रखता हूं। उनके नेतृत्व में उत्तर प्रदेश का चौमुखी विकास हो रहा है, जिसकी पूरे देश में सराहना की जा रही है। 200 से ज्यादा विधायकों और नेताओं की साथ बैठक, अब दिल्ली जा रहे उट योगी क्या कोई खास है एजेंडा? जब बीजेपी विधायक ने अपनी जान का खतरा बताया था, इसके बाद पूरे प्रदेश में हड़कंप मच गया था। डीएम और एसएसपी ने खुद सामने आकर बयान दिया था। एसएसपी ने कहा था कि जिस व्यक्ति पर विधायक ने एक करोड़ रुपये चंदा इकट्ठा कर हत्या की साजिश का आरोप लगाया है, उसकी मां सरोज देवी बीजेपी की जिला पंचायत सदस्य हैं। हालांकि एसएसपी ने कहा कि इस मामले में लोगों से पूछताछ की जा रही है और तथ्य के हिसाब से कार्यवाही की जाएगी। इसके बाद जिला पंचायत सदस्य सरोज देवी और उनके बेटे राजीव रंजन ने सोशल मीडिया पर वीडियो जारी कर अपना पक्ष रखा था। उन्होंने कहा था कि विधायक फतेह बहादुर सिंह चुनावी रंजिश का बदला ले रहे हैं और हमें फर्जी मुकदमे में फंसा कर जेल भिजवाना चाहते हैं।

आस्था...

31 जुलाई से इन राशियों की चमकेगी किस्मत, नई नौकरी के साथ बैंक-बैलेंस में होगी बढ़ोतरी, हर काम में मिलेगी सफलता...

शुक्र कर रहे हैं सिंह राशि में प्रवेश दैत्यों के गुरु शुक्र को धन-वैभव,विलासिता, सुख-समृद्धि, आकर्षण और प्रेम का कारक माना जाता है। शुक्र करीब 26 दिनों में राशि परिवर्तन करते हैं। वैदिक ज्योतिष के अनुसार, इस समय शुक्र कर्क राशि में विराजमान है। वहीं जुलाई के अंत में यानी 31 तारीख को वह सूर्य की राशि सिंह राशि में प्रवेश कर जाएंगे। सूर्य की राशि में जाने से कुछ राशि के जातकों को कई गुना अधिक लाभ मिल सकता है। आइए जानते हैं शुक्र के सिंह राशि में जाने से किन राशियों को मिलेगा लाभ वैदिक ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, शुक्र 31 जुलाई को दोपहर 2 बजकर 15 मिनट पर सिंह राशि में प्रवेश कर जाएंगे। शुक्र के इस राशि में आने से कुछ राशि के जातकों के स्वभाव में भी बदलाव देखने को मिल सकता है। इसके साथ ही आत्मविश्वास में वृद्धि भी हो सकती है। 30 साल बाद दूसरी बार शनि-सूर्य आए आमन-सामने, ये राशियां होगी भाग्यशाली, नई नौकरी के साथ होगा अपार धनलाभ मिथुन राशि इस राशि में शुक्र पंचम और बारहवें भाव के स्वामी है और सिंह राशि में प्रवेश करके इस राशि के तीसरे भाव में रहने वाले हैं। ऐसे में इस राशि के जातकों को जीवन में खुशियां आने वाली है। करियर के क्षेत्र में सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। इसके साथ ही सहकर्मियों और उच्च अधिकारी से आपको काफी सम्मान मिल सकता है। काम के सिलसिले में कई यात्राएं कर सकते हैं। इससे आपको लाभ मिलेगा। सहकर्मियों के साथ चली आ रही गलतफहमी भी दूर हो सकती है। लव लाइफ अच्छी जाने वाली है। वैवाहिक जीवन में भी अच्छा रहेगा। व्यापार की बार करें, तो काफी मुनाफा कमा सकते हैं। शेयर मार्केट से भी लाभ कमा सकते है। कमाई के नए स्त्रोत खुलेंगे। इसके साथ ही धन संचित करने में कामयाब हो सकते हैं। आउटसोर्सिंग से अच्छी कमाई हो सकती है। स्वास्थ्य भी अच्छा रहने वाला है। 365 दिन के बाद सूर्य बनाएंगे परम बलशाली बुधादित्य योग, इन 3 राशियों का खुलेगा भाग्य का ताला, तरक्की के साथ बढ़ेगा मान-सम्मान कर्क राशि इस राशि में शुक्र चतुर्थ और एकादश भाव के स्वामी है और सिंह राशि में प्रवेश करके दूसरे भाव में रहने वाले हैं। ऐसे में इस राशि के जातकों के परिवार का विकास अच्छे से होगा। अच्छी कमाई के संकेत मिल रहे हैं। कार्यस्थल में आपके काम की प्रशंसा होगी। इसके साथ ही पदोन्नति के साथ प्रोत्साहन मिल सकता है। व्यापार में भी खूब लाभ मिलेगा।

आज का राशिफल

मेष: चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ।

मेष: अपने खान-पान का विशेष ध्यान रखें। खास तौर पर माइग्रेन के मरीजों को समय पर खाना नहीं छोड़ना चाहिए, नहीं तो उन्हें व्यर्थ में भावनात्मक तनाव से गुजरना पड़ सकता है। बिना किसी अनुभवी शख्स की सलाह के आज ऐसा कोई भी काम न करें जिससे आपको आर्थिक हानि हो। आपके बच्चे के पुरुस्कार वितरण समारोह का बुलावा आपके लिए खुशनुमा एहसास रहेगा। वह आपकी उम्मीदों पर खरा उतरेगा और आप उसके जरिए अपने सपने साकार होते हुए देखेंगे। आप जहाँ हैं वहीं रहेंगे, बावजूद इसके प्यार आपको एक नए और अनोखे लोक में ले जाएगा।

वृषभ : उ, ई, ऐ, ओ, बा, बी, बे, बो।

वृषभ: ऊर्जा के अपने ऊँचे स्तर को आज अच्छे काम में लगाएँ। होशियारी से निवेश करें। आपका मजाकिया स्वभाव सामाजिक मेल-जोल की जगहों पर आपकी लोकप्रियता में इजाफा करेगा। प्यार-मोहब्बत के मामले में दबाव बनाने की कोशिश न करें। आज ऐसी कई सारी चीजें होंगी झ जिनकी तरफ तुरन्त गौर करने की आवश्यकता है। अपने जीवनसाथी की वजह से आपको मानसिक अशान्ति का सामना करना पड़ सकता है। आज छुट्टी के दिन किसी मल्टीप्लेक्स में जाकर कोई अच्छी फिल्म देखने से बढ़िया और क्या हो सकता है।

मिथुन: क, की, कू, घ, ड, छ, के, को, हा।

मिथुन: अपने डर का इलाज का वक़्त आ चुका है। आपको समझना चाहिए कि न सिर्फ यह शारीरिक ऊर्जा को चूस लेता है, बल्कि जिंदगी को भी कम करता है। आज आपको अपने भाई या बहन की मदद से धन लाभ होने की संभावना है। मेहमानों के साथ का आनंद लेने के लिए बढ़िया दिन है। अपने रिश्तेदारों के साथ कुछ खास करने की योजना बनाएँ। इसके लिए वे आपकी तारीफ करेंगे। किसी की प्यार में कामयाबी मिलने की कल्पना को सच कराने में मदद करें। अपनी खासियत और भविष्य की योजनाओं पर फिर से सोचने का समय। आप अपने जीवनसाथी के प्यार की गर्माहट महसूस कर सकते हैं। लंबे समय के बाद आप भरपूर नींद का मजा ले पाएंगे।

कर्क : ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो।

कर्क: आपका तल्ख बर्ताव जीवनसाथी के साथ आपके संबंधों में तनाव डाल सकता है। कोई भी ऐसा काम करने से पहले इसके परिणामों के बारे में सोच लें। अगर मुमकिन हो तो अपना मूड बदलने के लिए कहीं और जाएँ। सट्टेबाजी से फायदा हो सकता है। दोस्तों के साथ शाम बेहद मजेदार और हँसी-खुशी से भरपूर रहेगी आज के दिन अपने प्रिय की भावनाओं को समझें। अगर आप यात्रा कर रहें है तो सभी जरूरी दस्तावेज साथ रखना न भूलें। आपका जीवनसाथी आपकी बहुत तारीफ करेगा और आप पर बहुत स्नेह उढ़ेलेगा।

सिंह: मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे।

सिंह: ध्यान और आत्म-चिन्तन लाभदायक सिद्ध होगा। सिर्फ अक़्लमंदी से किया गया निवेश ही फलदायी होगा- इसलिए अपनी मेहनत की कमाई सोच-समझ कर लगाएँ। पढ़ाई-लिखाई में कम रुचि के चलते बच्चे आपको थोड़ा निराश कर सकते हैं। आज ही लंबे वक़्त से चले आ रहे झगड़ों को सुलझा लें, क्योंकि हो सकता है कि कल बहुत देर हो जाए। उन चीजों को दोहराना जिनका अब आपके जीवन में कोई महत्व नहीं है, आपके लिए ठीक नहीं है। ऐसा करके आप अपना वक्त ही बर्बाद करेंगे और कुछ नहीं।

कन्या: टो, पा, पी,पू, ष, ण, ठ, पे, पो।

कन्या: आपमें आज चुस्ती-फुर्ती देखी जा सकती है। आपका स्वास्थ्य आज पूरी तरह से आपका साथ देगा। बीते दिनों में जितना धन आपने आज को बेहतर बनाने के लिए इनवेस्ट किया था उसका फायदा आज आपको फायदा मिल सकता है। दिन के उत्तरार्ध में अचानक आई कोई अच्छी खबर पूरे परिवार को खुशी देगी। आज आपको महसूस होगा कि आपका महबूब आपसे कितना प्यार करता है। आज जीवनसाथी के साथ समय बिताने के लिए आपके पास पर्याप्त समय होगा। आपके प्रेम को देखकर आज आपका प्रेमी गदगद हो जाएगा।

तुला: रा, री, रू, रे, ता, ती, तू, ते।

तुला: आज खेल-कूद में हिस्सा लेने की जरूरत है, क्योंकि चिर यौवन का रहस्य यही है। रुका हुआ धन मिलेगा और आर्थिक हालात में सुधार आएगा। आपको अपने घर के माहौल में कुछ सकारात्मक बदलाव करने पड़ेंगे। आपको प्यार में गम का सामना करना पड़ सकता है। बिना किसी को बताए आज आप अकेले वक्त बिताने घर से बाहर जा सकते हैं। लेकिन आप अकेले तो होंगे लेकिन शांत नहीं आपके दिल में आज के दिन कई चिंताएं हैं होंगी। आपका जीवनसाथी आपसे नाराज हो सकता है, क्योंकि आप उनसे कोई बात साझा करना भूल गए थे।

वृश्चिक: तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू।

वृश्चिक: आज आपको आराम करने और करीबी दोस्तों व परिवार के साथ खुशी के कुछ पल बिताने की जरूरत है। उधार मांगने वाले लोगों को नजरअन्दाज करें। अगर आप अपने आकर्षण और होशियारी का इस्तेमाल करें, तो लोगों से मनचाहा व्यवहार पा सकते हैं। प्यार के नजरिए से यह दिन बेहद खास रहेगा। इस राशि के लोग बड़े ही दिलचस्प होते हैं। ये कभी लोगों के बीच रहकर खुश रहते हैं तो कभी अकेले में हालांकि अकेले वक्त गुजारना इतना आसान नहीं है फिर भी आज दिन में कुछ समय आप अपने लिए जरुर निकाल पाएंगे।

धनु : ये, यो, भ, भी, भू, धा, फा, ढा, भे।

धनु: शरीर के किसी अंगे में दर्द होने की संभावना है। किसी भी ऐसे काम से बचें, जिसमें ज्यादा शारीरिक मेहनत की जरूरत हो। पर्याप्त आराम भी करें। अपने लिए पैसा बचाने का आपका ख्याल आज पूरा हो सकता है। आज आप उचित बचत कर पाने में सक्षम होंगे। दोस्तों के साथ शाम बेहद मजेदार और हँसी-खुशी से भरपूर रहेगी आज हो सकता है कि पहली नजर में ही आपको कोई पसंद कर ले। आपका व्यक्तित्व ऐसा है कि ज्यादा लोगों से मिलकर आप परेशान हो जाते हैं और फिर अपने लिए वक्त निकालने की कोशिश करने लग जाते हैं।

मकर: भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, ग, गी।

मकर: आपका ऊर्जा-स्तर ऊँचा रहेगा। प्राप्त हुआ धन आपकी उम्मीद के मुताबिक नहीं होगा। अगर आपको किसी ऐसी जगह से बुलावा आया है जहाँ पहले आप कभी नहीं गए हैं, तो कृतज्ञता से उसे स्वीकार कर लें। रोमांस आपके दिल पर काबिज है। आज घर में अधिकतर समय आप सो कर गुजार सकते हैं। शाम के वक्त आपको महसूस होगा कि आपने अपना कितना कीमती समय बर्बाद कर दिया। आपके आस-पास के लोग कुछ ऐसा कर सकते हैं, जिसके चलते आपका जीवनसाथी आपकी तरफ फिर से आकर्षित महसूस करेगा।

कुंभ: गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा।

कुंभ: भरे-पूरे और संतुष्ट जीवन के लिए अपनी मानसिक दृढ़ता में वृद्धि कीजिए। अपने निवेश और भविष्य की योजनाओं को गुप्त रखें। दोस्तों और परिवार के साथ मजेदार समय बीतेगा। आज अचानक किसी से रोमांटिक मुलाकात हो सकती है। दीर्घावधि में कामकाज के सिलसिले में की गयी यात्रा फायदेमंद साबित होगी। आपको खुशी से भरी शादीशुदा ज़िन्दगी की एहमियत का एहसास होगा। स्कूल में आज आप किसी सीनियर के साथ उलझ सकते हैं। ऐसा करना आपके लिए ठीक नहीं है। अपने गुस्से को काबू में रखें।

मीन: दी, दू, थ, झ, दे, दो, चा, ची।

मीन: बच्चे आपकी शाम को खुशी की चमक लाएंगे। थकाऊ और उबाऊ दिन को अलविदा कहने के लिए एक बढ़िया डिनर की योजना बनाएँ। उनका साथ आपके शरीर में फिर से ऊर्जा भर देगा। विदेशों में पड़ी आपकी जमीन आज अच्छे दामों में बिक सकती है जिससे आपको मुनाफा होगा। पारिवारिक समारोह में नए दोस्त बन सकते हैं। हालाँकि अपने चयन में सावधानी बरतें। अच्छे दोस्त उस खजाने की तरह होते हैं, जिसे सारी जिंदगी दिल के करीब रखा जाता है। आज प्यार की कमी महसूस हो सकती है। खाली वक्त में आप कोई फिल्म देख सकते हैं।

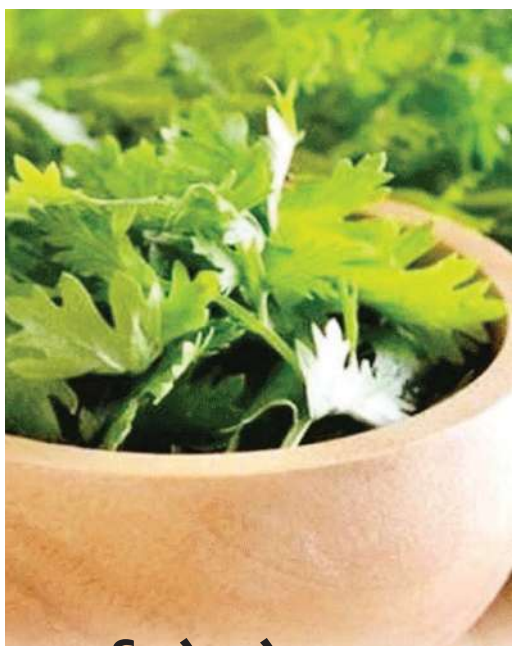

हार्ट से लेकर ब्रेन तक के लिए फायदेमंद है धनिया

हरे धनिये की पत्तियों का इस्तेमाल अक्सर सब्जियों के स्वाद और सलाद के लिए किया जाता है, वहीं हरी चटनी पकौड़े के स्वाद को दोगुना कर देती है। लेकिन इसी के साथ ही धनिया पत्तियों के कई फायदे हैं जिसके बारे में शायद ही आपको पता हो। तो जानते हैं हरे धनिया पत्ती के 10 फायदों के बारे में।

- धनिये की पत्तियों में विटामिन ए और सी पाया जाता है, जो रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने का काम करते हैं।
- गर्मी हो सर्दी, इसका इस्तेमाल करना हर समय शरीर को कई तरह से लाभ पहुंचाता है।
- पाचन शक्ति को मजबूत रखना है तो इसका इस्तेमाल आपको नियमित तौर पर करना चाहिए। इससे आपकी पाचन शक्ति बढ़ती है।
- धनिये की पत्तियों के सेवन से पेट संबंधी परेशानियों में आराम मिलता है और बदहजमी, पेट में दर्द, गैस की समस्या से छुटकारा मिलता है।
- जाड़े में खाने की मात्रा अधिक होने पर दस्त की शिकायत बढ़ने लगती है। ऐसे में धनिये की चटनी व सलाद पेट को राहत पहुंचाती है।
- धनिया की पत्ती विटामिन ए और सी का मुख्य स्रोत है। ये हमारे शरीर में रोग प्रतिरोधी क्षमता को मजबूत करते हैं।
- इसके नियमित सेवन से सर्दी-खांसी से छुटकारा मिलता है।
- धनिया में मौजूद तत्व शरीर से कॉलेस्ट्रॉल कम कर उसे कंट्रोल में रखते हैं। यह खून में इंसुलिन की मात्रा को नियमित करता है।
- धनिया महिलाओं में मासिक धर्म संबंधी समस्याओं को दूर करता है। अगर पीरियड्स साधारण से ज्यादा हो तो आधा लीटर पानी में लगभग 6 ग्राम धनिये के बीज डालकर उबालें। इस पानी में चीनी डालकर पीने से फायदा होगा।
- इसमें मौजूद विटामिन ए, विटामिन सी, कैल्शियम व मैग्नीशियम भरपूर मात्रा में मौजूद होता है, जो आपके स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है।

करेला खाने से दूर होती है ये बीमारियां

करेला औषधि के रूप में इस्तेमाल करने के लिए कच्चा करेला ही ज्यादा मुफीद होता है। करेला बेल पर लगने वाली सब्जी है। इसका रंग हरा होता है। इसकी सतह पर उभरे हुए दाने होते हैं। इसके अंदर बीज होती हैं और करेला पक जाए तो बीज लाल हो जाते हैं। जब तक पकता नहीं तब तक बीज सफेद रहते हैं।

करेले का न्युट्रिशनल वैल्यू

करेले में प्रचुर मात्रा में विटामिन ए, बी और सी पाए जाते हैं। इसके अलावा कैरोटीन, लुटीन, जिंक, पोटैशियम, मैग्नीशियम और मैगजीज जैसे फ्लावोन्वाइड भी पाए जाते हैं। करेले में मौजूद खनिज और विटामिन शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढाते हैं जिससे कैंसर जैसी बीमारी का मुकाबला भी किया जा सकता है। डार्क करेला में ढेरों एंटीऑक्सीडेंट और विटामिन पाए जाते हैं। करेले का सेवन हम कई रूपों में कर सकते हैं। हम चाहें तो इसका जूस पी सकते हैं, सब्जी या अचार बना सकते हैं। करेला ठंडा होता है, इसलिए यह गर्मी से पैदा हुई बीमारियों के इलाज के लिए बहुत लाभकारी है। अगर आपकी पाचन शक्ति कमजोर हो तो किसी भी प्रकार करेले का नित्य सेवन करने से पाचन शक्ति मजबूत होती है।

फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट्स का खजाना है सिंघाड़ा जमकर खाएं

ब्लड प्रेशर बढ़ना एक गंभीर समस्या है। इसके कारण दिल, दिमाग और किडनी डैमेज हो सकती हैं। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन बताता है कि 30 वर्ष से 79 वर्ष तक के करीब 128 करोड़ लोगों को हाइपरटेंशन (हाई बीपी) की बीमारी है, जो कि कम उम्र में मौत का कारण बन रही है।

सिंघाड़ा खाकर हाई बीपी का देसी इलाज किया जा सकता है। क्योंकि बीपी को कंट्रोल में करने में सिंघाड़ा मदद करता है। यह सुपरफूड हाई बीपी का ऊपर और नीचे वाला लेवल कम कर सकता है। ऐसा कई शोध दावा करते हैं। हाई बीपी के मरीजों को डाइट में सिंघाड़ा खाना चाहिए। सिंघाड़े को कई बीमारी के मरीज खा सकते हैं। दिल के मरीजों के साथ दर्द से परेशान और डायबिटिक पेशेंट के लिए सिंघाड़ा फायदेमंद होता है। नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन पर छपी एक रिसर्च बताती है कि सिंघाड़े में इन बीमारियों का इलाज करने वाले गुण होते हैं।

दिल की बीमारी की जड़ है हाई बीपी

दुनियाभर में सबसे ज्यादा मृत्यु दिल से जुड़ी बीमारी के कारण होती हैं। जिसकी जड़ कोलेस्ट्रॉल के साथ हाई ब्लड प्रेशर (हाइपरटेंशन) होती है। तेज सिरदर्द होना, सांस फूलना और नाक से खून आना हाई ब्लड प्रेशर के संकेत होते हैं।

सिस्टोलिक ब्लड प्रेशर कम होगा

नॉर्मल बीपी कितना होना चाहिए? नॉर्मल बीपी 120/80 होना चाहिए। जिसमें ऊपर वाला लेवल सिस्टोलिक ब्लड प्रेशर और नीचे वाला लेवल डायस्टोलिक ब्लड प्रेशर कहलाता है। सिंघाड़ा खाने से सिस्टोलिक और डायस्टोलिक ब्लड प्रेशर कई पॉइंट नीचे आ जाता है।

पतला बनाता है सिंघाड़ा

सिंघाड़े में पानी बहुतायत में होता है, जिस कारण इसे हाई-वॉल्यूम फूड कहा जाता है। इसे खाने से फैट नहीं बढ़ता है और आपको वजन कम करने में मेहनत कम करनी पड़ती है। वहीं, सिंघाड़े में मौजूद फाइबर डायजेस्टिव सिस्टम को मजबूत बनाकर भी पतला बनाता है।

बीपी कंट्रोल करता है पोटैशियम

सिंघाड़े के अंदर प्रचुर पोटैशियम होता है और दिल के लिए पोटैशियम फूड काफी अच्छे होते हैं। क्योंकि, यह मिनरल ब्लड प्रेशर को कंट्रोल करने में मदद करता है। एक स्टडी में पर्याप्त पोटैशियम लेने से सिस्टोलिक बीपी 3.49 और डायस्टोलिक बीपी 1.96 कम देखा गया।

फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट्स का खजाना

सिंघाड़े को फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट्स का खजाना कहा जा सकता है। हेल्थलाइन के मुताबिक, इस टेस्टी फूड में कैलोरी की मात्रा काफी कम होती है और इसे खाने से मैंगनीज, कॉपर, प्रोटीन, राइबोफ्लेविन और विटामिन बी6 भी मिलता है।

दिल को हेल्दी रखने के लिए डॉक्टर्स ने दी ब्रिस्क वॉक की सलाह

हार्ट अटैक से मौतों का ट्रेंड दिन-ब-दिन डरावना होता जा रहा है। चलते-फिरते जान जाने वाले वीडियोज हर किसी को डरा रहे हैं। इस बीच आम लोग समाधान खोज रहे हैं तो डॉक्टर्स के बीच भी चर्चे शुरू हो गए हैं।

ज्यादातर डॉक्टर्स और हार्ट स्पेशलिस्ट सलाह दे रहे हैं कि हमें हर कीमत पर अपनी लाइफस्टाइल सुधारनी होगी। इसमें सबसे जरूरी स्टेप है फिजिकली ऐक्टिव रहना। इसके लिए भी आपको ज्यादा कुछ नहीं करना बस तेज कदमों के साथ टहलना है। डॉक्टर बैलेंस्ड डायट के साथ हफ्ते में कम से कम 5 दिन 45 मिनट ब्रिस्क वॉक करने की सलाह दे रहे हैं। यहां जानें ब्रिस्क वॉक क्या है, इसके फायदे और इसमें लोग क्या क्या गलतियां करते हैं।

डॉक्टर ने दी ब्रिस्क वॉक की सलाह

हार्ट अटैक या सडन कार्डिएक अरेस्ट की खबरें हर किसी को डरा रही हैं। ऐसे में पैनिक करने के बेहतर है समाधान पर बात की जाए। ज्यादातर हेल्थ एक्सपर्ट्स का मानना है कि लोगों की लाइफस्टाइल उनकी अचानक मौतों के लिए जिम्मेदार है। दिल को हेल्दी रखना है तो फिजिकली ऐक्टिव रहना जरूरी है। इसके लिए डॉक्टर्स ब्रिस्क वॉक की सलाह देते हैं। यह आपका वजन कंट्रोल करती है, दिल मजबूत रखती है साथ ही आपका स्ट्रेस भी कम होता है। सबसे पहले जानते हैं कि ब्रिस्क वॉक आखिर है क्या?

गिनें प्रति मिनट कदम

ब्रिस्क वॉक में नॉर्मल वॉक से थोड़ा तेज चला जाता है। आसान भाषा में समझें तो एक मिनट में आपको 100 कदम चलने होते हैं। आप साथ में स्टेप काउंटर ऐप का इस्तेमाल कर सकते हैं। इससे गिनती में आसानी रहेगी। ये ऐप आपको मोबाइल में ही मिल जाएगा। ब्रिस्क वॉक के दौरान चेक करें कि आप बात कर पा रहे हैं या नहीं। अगर आपकी थोड़ी बहुत सांस टूट रही है और आराम से बात कर ले रहे हैं तो आप मॉडरेट लेकिन ब्रिस्क वॉक कर रहे हैं।

न करें ये गलतियां

लोग ब्रिस्क वॉक को नॉर्मल वॉक समझ लेते हैं। ध्यान रखेंगे कि ब्रिस्क वॉक का टारगेट हार्टरेट होता है। अगर आपकी स्पीड जरूरत से कम है तो ज्यादा फायदा नहीं होगा। वहीं अगर आपकी स्पीड बहुत ज्यादा है तो भी दिक्कत हो सकती है। ब्रिस्क वॉक के दौरान आपको फुटवेअर कम्फर्टेबल होने चाहिए। रनिंग शूज ही पहनें। वर्ना पैरों की मसल्स में प्रॉब्लम हो जाएगी।

ब्रिस्क वॉक के फायदे

ब्रिस्क वॉक के अनगिनत फायदे हैं। यह आपका एक्सट्रा वजन कम करती है। आपकी कैलोरी बर्न होती है और लीन मसल्स बढ़ती है। वॉक करने से आपका मूड ठीक रहता है। ब्रिस्क वॉक से आपके दिल की सेहत ठीक रहती है, ब्लड प्रेशर लो होता है साथ ही ब्लड शुगर भी मेनटेन रहती है।

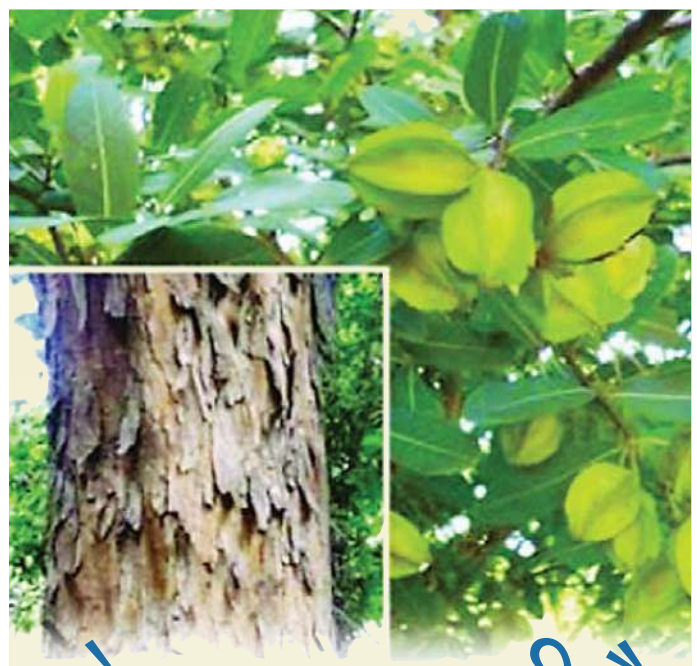

बेहद करामाती है इस पेड़ की छाल डायबिटीज और हड्डियों के लिए है वरदान

आयुर्वेद में अर्जुन के पेड़ को कई औषधीय गुणों से भरा हुआ बताया गया है। अर्जुन के पेड़ की छाल भी सेहत के लिए काफी फायदेमंद होती है। इस पेड़ की छाल का पाउडर बनाकर उपयोग किया जाता है। अर्जुन की छाल से स्ट्रोक, हार्ट अटैक और हार्ट फेल जैसे हार्ट संबंधी रोगों का इलाज किया जा सकता है। अर्जुन का पेड़ भारत में हिमालय की तराई, उत्तरप्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश में ज्यादा पाया जाता है।

अर्जुन के पेड़ में बीटा-सिटोस्टिरोल, इलेजिक एसिड, ट्राईहाइड्रोक्सी ट्राईटरपीन, मोनो कार्बोक्सिलिक एसिड, अर्जुनिक एसिड पाया जाता है, जिस कारण यह रोग को दूर करने के लिए काफी उपयोगी माना जाता है। अर्जुन की छाल से हृदय रोग, क्षय, पित्त, कफ, सर्दी, खांसी, अत्यधिक कोलेस्ट्रॉल और मोटापे जैसी बीमारी को दूर करने में मदद मिलती है। इसके अलावा यह महिलाओं के लिए भी काफी उपयोगी है। खूबसूरती बढ़ाने वाली क्रीम के अलावा स्त्री रोगों में भी यह बहुत काम की औषधि है।

स्तन कैंसर को रोकती है अर्जुन की छाल

कई रिसर्च में खुलासा हुआ है कि अर्जुन के पेड़ में कसुआरिनिन नाम का रासायनिक घटक पाया जाता है। इसके कारण शरीर में कैंसर की कोशिकाएं फैल नहीं पाती है। विशेषकर स्तर कैंसर कोशिकाओं के विकास को रोकने में अर्जुन की छाल बड़े काम की है। यदि गर्म दूध में अर्जुन के पेड़ की छाल को बारिक पीसकर रोज सेवन किया जाए तो स्तन कैंसर से बचा जा सकता है।

दिल के रोगियों के लिए रामबाण औषधि

अर्जुन की छाल दिल के रोगियों के लिए एक असरकारक दवा है। जिनका कोलेस्ट्रॉल बढ़ा है और थोड़ा भी पैदल चलने पर सांस फूलने लगती है, उन्हें अर्जुन की छाल की चाय अवश्य पीनी चाहिए। अर्जुन की छाल धमनियों में जमने वाले कोलेस्ट्रॉल और ट्रायग्लूसराइड को कम करती है। इससे दिल को रक्त पहुंचाने वाली धमनियां सुचारू काम करने लगती हैं। इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि कोलेस्ट्रॉल या ट्राइग्लूसराइड का ज्यादा बढ़ना दिल के लिए घातक हो जाता है। इससे कई बार हार्ट अटैक आने का भी खतरा रहता है। ऐसे मरीजों को रोज अर्जुन की छाल का इस्तेमाल किसी न किसी रूप में अवश्य करना चाहिए।

डायबिटिज के रोगी ऐसे करें अर्जुन की छाल का प्रयोग

अर्जुन की छाल एक साथ कई बीमारियों को साध सकती है। कैंसर व दिल से संबंधित बीमारियों के अलावा डायबिटीज की बीमारी को नियंत्रित करने में अर्जुन की छाल बड़े काम की औषधि है। लेकिन इसके लिए अर्जुन की छाल के साथ देसी जामुन को समान मात्रा मिलाकर पीसकर चूर्ण बना लेना चाहिए। इस चूर्ण को रोज सोने से पहले गुनगुने पानी के साथ लेना डायबिटीज के मरीज के लिए फायदेमंद होता है।

रुक जाता है मोटापा बढ़ना

अर्जुन की छाल का काढ़ा पीने से मोटापे की बीमारी भी नहीं होती है क्योंकि पाचन तंत्र इसके लगातार सेवन से ठीक रहता है। यदि लगातार इसका सेवन किया जाए तो सिर्फ एक माह के इसका असर देखा जा सकता है। अर्जुन की छाल इम्यून सिस्टम को भी मजबूत करती है, जिससे सर्दी खांसी जैसी बीमारियां भी नहीं होती हैं।

मुंह के छाले होते हैं दूर

अर्जुन की छाल चूंकि पेट साफ करती है और इसकी तासीर ठंडी होती है इसलिए यदि इसका रोज सेवन किया जाए तो कभी भी मुंह में छाले नहीं होते हैं। इसके अलावा यह खून को बगैर दवा लिए प्राकृतिक रूप में पतला करने भी औषधि है। इसके सेवन से हाई ब्लड प्रेशर की समस्या भी पैदा नहीं होती है।

सीपी अखिल की इमानदारी से कानपुर में बंद हुआ रिश्वत के बल पोस्टिंग का धंधा, परेशान भ्रष्ट थानेदार

ट्रांसफर माफिया दद्दा के जरिए कानपुर में पहले खुलेआम होती थी थानों ,चौकियों की नीलामी, करोड़ों ले गए कई भ्रष्ट अधिकारी

- थानों और चौकियों की बिक्री को लेकर पूर्व में काफी चर्चा में रह चुका कानपुर
- थानों और चौकियों को अपना घर मकान मान उस समय थानेदार रूपी किराएदारों से पगड़ी के साथ मासिक किराया भी किया जाता था वसूल

♦भारत टाइम्स♦

सुनील बाजपेयी कानपुर। यहां पहले की तरह रिश्वत के बल पर मनचाही पोस्टिंग में सफलता नहीं मिलने से कतिपय भ्रष्ट पुलिस वाले आजकल बहुत परेशान, हताश और निराश बताये जाते हैं। मतलब अब उनका रिश्वत के बल पर मनचाही पोस्टिंग कराने का सपना किसी भी तरह से पूरा नहीं हो पा रहा है, जिसकी असली वजह है ,यहां के पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार की कर्तव्य के प्रति परिश्रम पूर्ण प्रगाढ़ निष्ठा और उनकी बेहद ईमानदारी। यही वजह है कि यहां के सभी 52 थानों में ऐसा कोई थाना नहीं है, जहां किसी भी थानेदार को पूर्व की तरह रिश्वत के बल पर पोस्टिंग कराने में सफलता मिली हो और फिर उसी के बदले उसे विभिन्न हड़कंडों से दस गुना पैदा करने का मौका मिला हो या मिल रहा हो। इसी आधार पर भरोसेमंद का दावा है कि अगर भ्रष्ट थानेदारों का बस चले तो वे किसी ऐसे भ्रष्ट्र को कानपुर का पुलिस कमिश्नर बनवा दें ,जो मनचाही पोस्टिंग करने की अपनी कीमत ले और बदले में उन्हें भी कमाने का मौका दे। वैसे कानपुर को आज भी वह समय याद है, जब रिश्वतखोरी के रूप में अधिक से अधिक कमाई के लिए अनेकानेक भ्रष्ट पुलिसकर्मी उस समय बहुत खुश हुआ करते थे ,जब वे ले देकर अपनी मनचाही पोस्टिंग कराने में सफल रहते थे । मतलब अधिकांश भ्रष्ट पुलिस वालों की महाभ्रष्ट माने उन अधिकारियों से ही ज्यादा पटती रही है, जो उस समय 50 हजार से लेकर चार - पांच लाख में थानों और पुलिस चौकियों आदि को भी सरेआम नीलाम करने के साथ ही सुरा और सुन्दरी के सेवन के लिए भी कुख्यात माने जाते रहे हैं। विभागीय सूत्रों के मुताबिक कानपुर में पोस्टिंग के उस कालखंड में कुछ को छोड़ कर बाकी नियुक्त रहे कई भ्रष्ट आई पी एस अधिकारी कुख्यात ट्रांसफर माफिया लल्ला उर्फ दल्ला उर्फ दद्दा के माध्यम से भी थानाध्यक्ष बनाने के लिए कम से कम तीन से पांच लाख और चौकी के लिए पचास हजार खुले आम लेते थे, यही नहीं सिपाहियों के तबादले का रेट भी पंद्रह से लेकर बीस हजार तक कर रखा गया था। मतलब उस समय नियुक्ति के मामले में थानों और चौकियों की हालत वही थी ,जो दुकान - मकान मालिक और किरायेदार के बीच होती है। यानी थानों और चौकियों को अपना मकान और दुकान मानने वाले यहां ऐसे भी कई पुलिस अधिकारी पोस्ट रहे , जो उस समय कुख्यात ट्रांसफर माफिया लल्ला उर्फ दल्ला उर्फ दद्दा आदि के माध्यम से थानेदार रुपी किरायेदारों से लाखों की पगड़ी के साथ हर माह लाखों रुपये उसका किराया भी वसूलते थे और जो भी थानेदार अदा करने में अक्षम रहता था, उससे थानों और चौकियों रुपी मकान को तत्काल खाली कराकर उसे दे दिया जाता था ,जो हर माह बढ़ा हुआ किराया देने में सक्षम होता था। जानकार सूत्रों की नजर में अब जहां तक वर्तमान परिस्थितियों का सवाल है। अगर कोई भी पुलिस वाला रिश्वत के बल पर मनचाही कमाऊ पोस्टिंग हासिल करना चाहता है तो उसकी यह तमन्ना तब तक पूरी नहीं हो सकती, जब तक यहां पुलिस कमिश्नर के रूप में कानपुर की कमान कानून और शांति व्यवस्था के पक्ष में अपराधियों के खिलाफ सफल मोर्चा खोले और हर स्तर की अनुचित सिफारिशों को जूते की नोक पर मारने के लिए भी चर्चित निष्पक्ष और पारदर्शी कार्यशैली के ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ आईपीएस अखिल कुमार के हाथ में है। इसी के साथ यह भी जान लेना चाहिए कि पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार ने अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा और ईमानदारी से समझौता आजतक नहीं किया। और ना ही कभी करेंगे। वह एक दिन भी यहां रहें अथवा ना रहें। मतलब अब वह समय चला गया ,जब मुंह मांगी कीमत जमा करने के बदले मनचाही नियुक्ति वाली आदेश पर्ची मिल जाया करती थी। थाने के लिए भी और चौकी के लिए भी, लेकिन अब ऐसा कुछ भी नहीं होने वाला, क्योंकि आजकल पुलिस कमिश्नर के रूप में कानपुर की कमान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अगुवाई वाली यूपी सरकार की मंशा पर हर दृष्टिकोण से खरे उतरने वाले बेहद ईमानदार और कर्तव्य के प्रति बेहद निष्ठावान आई पी एस अखिल कुमार के हाथ में है। और यह वही वरिष्ठ आईपीएस अखिल कुमार हैं, जिनकी निष्पक्ष, पारदर्शी और कठोर परिश्रम पूर्ण ईमानदार कार्यशैली तथा व्यवहार से सदैव यही प्रमाणित हुआ है कि अच्छे कार्यों के लिए हर स्थिति में और हर तरह से साथ देते हुए मातहतों का मनोबल बढ़ाना, कार्य सरकार के प्रति लापरवाही, जानबूझ कर किए गये अपराध ,गल्ती पर कड़ी से कड़ी कार्यवाही करना और भ्रष्ट पुलिस वालों को सबक सिखा कर ही चैन की सांस लेना भी उनके जुझारू स्वभाव का प्रमुख हिस्सा है, जिसकी पुष्टि निर्दोष फंसे नहीं और अपराधी बचे नहीं जैसी विचारधारा के अनुरूप अब तक के उत्कृष्ट सराहनीय सेवा कार्यकाल में मानवीय दृष्टिकोण वाले बेहद ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार द्वारा ट्रैफिक व्यवस्था को अति सुगम बनाने के साथ ही ऑपरेशन त्रिनेत्र के तहत अब तक हजारों की संख्या में लग चुके सीसीटीवी कमरों के जरिए छोटी बड़ी हर घटना के अपराधियों को अति शीघ्र पकड़ने और भ्रष्ट पुलिस कर्मियों को भी भरपूर सबक सिखाने से भी होती है। भरोसे मंद सूत्रों की नजर में यह बात दीगर है कि अगर यूपी में भ्रष्टाचार को काफी हद तक खत्म करने में पूर्ण रूप से सफल योगी आदित्यनाथ की सरकार नहीं होती तो सफेदपोश माफिया अपराधियों और भ्रष्ट्र पुलिस वालों का इरादा अवश्य ही पूरा हो गया होता। मतलब रिश्वत के बल पर मनचाही पोस्टिंग में बाधक ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ वरिष्ठ आईपीएस एडीजी अखिल कुमार की जगह अब तक कोई महाभ्रष्ट्र कुंडली मारकर कानपुर में बैठ भी चुका होता।

सीसीटीवी की मदद से पुलिस ने लैपटॉप चोरी की घटना को रोका

♦भारत टाइम्स♦

रतलाम /जगदीश परमार। चोरी की नियत से कार से निकालकर अन्य जगह छुपाया लैपटॉप सीसीटीवी की मदद से पुलिस ने किया बरामद उक्त व्यक्ति (श्रवण कुमार दीक्षित) द्वारा स्टेशन रोड थाने पहुंच कर आवेदन दिया की मैं चार्टड बस स्टैंड फव्वारा चौक पर मेरी ब्रिजा कार से पार्सल लेने गया था उसी वक्त में पार्सल लेने ऑफिस में गया इतनी देर में मेरी गाड़ी में से कुछ अज्ञात व्यक्ति द्वारा मेरा बैग ओर लैपटॉप गाड़ी में से चोरी कर के ले गए। थाना स्टेशन रोड से आरक्षक और फरियादी सीसीटीवी कंट्रोल रूम आए व घटना क्रम बताया गया जिस आधार पर सीसीटीवी कंट्रोल में लगे कैमरे देखे गए जिस पर कैमरों में कार में से बैग निकालते हुए कुछ लड़के दिखाई दिए ।सीसीटीवी कैमरों में देखा गया आरोपी द्वारा बैग में से नगदी 5000/ निकाल कर बैग व लैपटॉप को एक बस स्टैंड पर खड़े पिकअप वाहन में रख दिया ।जिस पर पुलिस तत्काल महू रोड बस स्टैंड पर पहुंच कर फरियादी का बैग ओर लैपटॉप पिकअप वाहन से जप्त किया व फरियादी को वापस लौटाए गए। इनकी रही महत्वपूर्ण भूमिका उनि राजा तिवारी सीसीटीवी प्रभारी सऊनि देवेंद्र ठाकुर, आरक्षक (रे) पारस चावला, आरक्षक 607 देवेंद्र सिंह डोडिया, आरक्षक 208 राकेश निनामा, आरक्षक 158 संदीप कुमरे।

बालोद पुलिस ने सुलझाई अंधे कत्ल की गुत्थी

थाना डौण्डीलोहारा के ग्राम कोटेरा मे हुआ था ग्रामीण की हत्या आरोपी गिरफ्तार

- फार्म हाउस में हुआ था वादविवाद के बाद हत्या
- आरोपी भुनेष्वर नेताम हत्या के मामले में पुर्व में भी जा चुका है जेल
- हत्या की सूचना के बाद चंद घंटो में आरोपी को पकड़ने में मिला सफलता

♦भारत टाइम्स♦

डौंडी लोहारा इस्लाम खान। मामले का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि प्रार्थी केशव ठाकुर निवासी ग्राम भरीटोला कुसुमकसा ने दिनांक 26.07.2024 को सुचना दिया कि संजय ठाकुर पिता ब्यासुत ठाकुर निवासी कोटेरा थाना डौण्डीलोहारा जो कि गांव कोटेरा के फार्म हाउस बाड़ी में मृत अवस्था में पड़ा है, जिसकी किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा धारदार हथियार से मारकर हत्या कर दिया गया है। जिसकी रिपोर्ट पर थाना डौण्डीलोहारा मे मर्ग क्रमांक 46/2024 धारा 194 बीएनएसएस कायम कर मामला प्रथम दृष्टया पाया जाने से अपराध क्र 117/2024 धारा 103(1) बीएनएस कायम किया गया। घटना स्थल पर वरिष्ठ अधिकारियो के द्वारा का बारिकी से निरीक्षण कर एफएसएल टीम को बुला कर उनके द्वारा भी घटना स्थल का निरीक्षण किया गया। थाना डौण्डीलोहारा प्रभारी के नेतृत्व में टीम बना कर गांव में मुखबीर लगाया गया। घटना के संबध में जानकारी प्राप्त कर घटना स्थल जो देवलाल ठाकुर कें फार्म हाउस बाड़ी जो ग्राम कोटेरा में है जिसमें चौकीदार भुनेष्वर नेताम है ।प्रार्थी केषव ठाकुर जो अन्य बाड़ी का चौकीदार है बताया कि कल शाम मृतक ओ और आरोपर भुनेष्वर ठाकुर वंहा पर बैठ कर शराब पिये थे और उन दोनो के बीच विवाद भी हुआ था। कि सूचना पर टीम द्वारा चौकीदार भुनेष्वर ठाकुर को पकड़कर पूछताछ करने पर पहले वह गोल मोल जवाब दे रहा था बाद क्रास चेक करने और कड़ाई से पूछताछ करने पर अपना जुर्म कबूल किया और बताया कि कल शाम को भुनेष्वर ठाकुर, केषव ठाकुर और संजय ठाकुर ग्राम कोटेरा के बाड़ी में शराब पी रहे थे। कि संजय बार बार उसकी पत्नी जो वंहा खाना बना रही थी के पास जा रहा था। जिससे भुनेष्वर ठाकुर और संजय का झगड़ा हो गया। इसके बाद रात को केषव और भुनेष्वर की पत्नि दोनो वहां से चले गये थे कि रात करीबन 09/10 बजे भुनेष्वर और संजय का फिर आपस में झगडा हुआ जिससे संजय उसकी पत्नी के बारे में अपषब्द बोल रहा था। जिससे भुनेष्वर आक्रोष में आकर बाड़ी में रखे टंगिया से संजय के सिर पर वार कर दिया जिससे उसकी मौके पर मृत्यु हो गई। आरोपी भुनेष्वर ठाकुर को विधिवत गिरफ्तार कर अग्रिम कार्यवाही किया जा रहा है ।आरोपी भुनेश्वर ठाकुर द्वारा पूर्व में हत्या के मामले में जेल काट चुका है। आरोपी भुनेष्वर ठाकुर पिता बेल सिंह उम्र 50 वर्ष पता- ग्राम मडियाकटटा थाना डौण्डीलोहारा, जिला बालोद ।अंधे कत्ल की गुत्थी सुलझाने व आरोपी की गिरफ्तारी में:- उप पुलिस अधीक्षक सुश्री नवनीत कौर, डौण्डीलोहारा थाना प्रभारी निरीक्षक लक्ष्मी जायसवाल सउनि अनित राम यादव ,प्र आर. अरविंद यादव , आर. त्रवेष सिन्हा , धमेन्द्र सेन, रूपेष सलामें व थाना स्टाफ की सराहनीय भूमिका रही है।

गुरु पूर्णिमा महोत्सव मनाया गया

दिनेश प्रजापत जोजावर। समीपवर्ती गांव कोट सोलंकियान में गुरुदेव श्री 1008 गुलाब दास कोट गुरुगादी पर गुरु पूर्णिमा महोत्सव के उपलक्ष में गुरु पूर्णिमा महोत्सव का आयोजन किया गया मिश्रीलाल गुजरिया ने बताया कि इस महोत्सव पर गुरुदेव का पूजन कर आए हुए भक्तों का माल साफा व मोमेंटो तो देकर स्वागत किया गया मोमेंटो मिश्रीलाल गुजरिया की तरफ से दिए गए इस मौके पर शंकरलाल, जालाराम कोट, किकाराम पनोता, किकाराम कोलर, मूलाराम सासरी, आदि भक्तगण उपस्थित थे।

मेघनगर कस्तूरबा गांधी बालिका छात्रावास का आकस्मिक निरीक्षण मेघनगर एसडीएम ने अपनी टीम के साथ किया

♦भारत टाइम्स♦

रहीम शेरानी झाबुआ। मेघनगर संभागीय आयुक्त के आदेश के परिपालन ओर जिला कलेक्टर श्रीमती नेहा मीना के निर्देशनुसार पर मेघनगर अनुविभागीय अधिकारी राजस्व मुकेश सोनी के द्वारा कस्तूरबा गांधी बालिका छात्रावास का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। उपस्थित हॉस्टल वार्डन श्रीमती पुष्पा पंचाल को सख्त निर्देश दिए गये की जो भी कमीया है उसे तत्काल दुरुस्त करवाकर हमे अवगत कराए। यहा पर लोक स्वास्थ यांत्रिकी विभाग से पहुचे सब इंजीनियर अंतरसिंह मंडलोई द्वारा पानी की शुद्धता की भी जांच की गई साथ ही स्वास्थ विभाग की टीम के द्वारा ब्लड, शुगर, आदि विभिन्न प्रकार की जांचें की गई मलेरिया निरीक्षक पाश्र्व सोंलकी द्वारा भी खुली पानी की टंकी में उत्पन्न हो रहे लार्वा को खत्म करने के लिए दवाई का छिड़काव किया गया। इस दौरान

बी.ई.ओ.दिलीप नायक, सी.एम.ओ. राहुल सिंह वर्मा, जिला खाद्य आपूर्ति अधिकारी धर्मेंद्रसिंह व एस.आई, रावत आदी कर्मचारी अधिकारी उपस्थित थे ।

मेघनगर के औद्योगिक क्षेत्र में अति शीघ्र स्थापित होगा ट्रीटमेंट प्लांट एसडीएम सोनी

अखबारो एवं चेनलो की वजहा से सुर्खियों में आने के बाद ट्रीटमेंट प्लांट स्थापित करने की कार्रवाई शुरू

♦भारत टाइम्स♦

रहीम शेरानी झाबुआ। मेघनगर के औद्योगिक क्षेत्र में शीघ्र क्रियाशील होगा सीईटीपी (वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट) औद्योगिक क्षेत्र मेघनगर अंतर्गत केमिकल फैक्ट्रीयों तथा सीईटीपी (वाटर ट्रीटमेंट प्लांट) का निरीक्षण प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड एवम् एमपीआईडीसी के अधिकारियों के साथ एसडीएम मुकेश सोनी द्वारा किया गया ।इन इकाइयों से प्रदूषित पानी निकलकर गारिया नाले में जाकर मिलता है जहां से आगे चलकर अनास नदी में पहुंचने से नदी के पानी को भी प्रदूषित करता है। जिससे मेघनगर की पेयजल सप्लाई रोकना भी पड़ती है। मीडिया के जागरूक पत्रकारों ने इस समस्या को उठाया ।जिससे जिला कलेक्टर नेहा मीना द्वारा समस्या के

समाधान के लिए लगातार प्रयास किए गए जिसके चलते उद्योग क्षेत्र में स्थापित सीईटीपी संयंत्र के क्रियाशील करने की दिशा में काम शुरू किया जा रहा है। संयंत्र को शुरू करने हेतु मध्य प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा एनओसी जारी कर दी गई है। अब केमिकल फैक्ट्री से दूषित पानी परिवहन कर सीईटीपी संयंत्र तक लाया जाकर ट्रीटमेंट प्लांट शुरू किया जाना है, जो इसी सप्ताह प्रारंभ होने की संभावना है। इस कार्यवाही के दौरान कलेक्टर के निर्देश पर एसडीएम, प्रदूषण बोर्ड तथा एमपीआईडीसी के अधिकारियों द्वारा आगामी कार्रवाई की जाने बाबत निरीक्षण किया जा रहा है। मध्य प्रदेश उद्योग विकास निगम द्वारा समस्त केमिकल फैक्टरीज को पत्र जारी कर सूचना दी गई है की वह अपनी इकाई का प्रदूषित पानी सीईटी प्लांट पर पहुंचने के लिए कार्रवाई शुरू कर दें।

मेघनगर तपस्वियों ने विधि विधान से भरे तपस्या के कलश

विजय तिलक के साथ तपस्या का आगाज हुआ

♦भारत टाइम्स♦

रहीम शेरानी झाबुआ। मेघनगर नगर में ज्ञानतत्व तपोमय चातुर्मास के अंतर्गत पूज्य साध्वी श्री तत्वलताश्रीजी महाराज साहब आदि ठाणा 4 की पुनीत निश्रा में विधिकारक विपिनिभाई द्वारा मेघनगर श्रीसंघ में भद्रतप एवं सिद्धितप आराधना का कलश विधि विधान से भरवाए गए, जिसमे लगभग 63 से अधिक पुण्यशालियो ने तपस्या के कलश भरते यही भाव व्यक्त किए कि, अपनी तप आराधना गुरुकृपा से निर्विघ्न संपन्न हो। पुण्य सम्राट की मासिक पुण्यतिथि के शुभ पर इन दोनो तपस्या का विजय तिलक के साथ आगाज सभी तपस्वियों को विजय तिलक करने का लाभ नरेन्द्र राहुल, आरव रांका परिवार ने लिया, वही तस्वियो को अक्षत और श्रीफल से वधाने का लाभ सोहनलाल राहुल, रिदीत, दीर्घ रूनवाल परिवार ने लिया।

स्कूल शिक्षा विभाग के कॅरियर पोर्टल पर उपलब्ध है महत्वपूर्ण जानकारियाँ

- प्रत्येक जिले में 2-2 शिक्षक मास्टर ट्रेनर

♦भारत टाइम्स♦

देवास/जगदीश परमार। स्कूल शिक्षा विभाग ने प्रदेश में स्कूल जाने वाले विद्यार्थी अपनी रूचि के अनुसार कॅरियर विकल्पों का चयन करने के लिये कॅरियर पोर्टल तैयार किया है। पोर्टल पर 500 से अधिक कॅरियर संबंधी, 7 हजार 500 से अधिक कॉलेज, 1000 से अधिक प्रवेश परीक्षाएँ और 750 से अधिक छात्रवृत्तियों की जानकारी उपलब्ध कराई गई है। इससे विद्यार्थी अपनी पसंद का ऑप्शन चुन सकते है। स्कूल शिक्षा विभाग ने शैक्षिक एवं कॅरियर के विकल्पों के चयन के ?लिये कॅरियर कांउन्सिलिंग के क्षेत्र में कार्य कर रही संस्था आईसीएस लखनऊ के साथ

अनुबंध किया है। इस अनुबंध के आधार पर प्रदेश के समस्त विद्यालयों में कॅरियर कांउन्सिलिंग कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है। कांउन्सिलिंग एवं गाईडेन्स से संबंधित कौशल विकास के लिये 3 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण आयोजित भी किया जा चुका है। इस कार्यक्रम के लिये प्रत्येक जिले से 2-2 शिक्षकों को मास्टर ट्रेनर के रूप में चुना गया है और उन्हें आईसीएस पोर्टल और एप के उपयोग संबंधी आवश्यक प्रशिक्षण दिलाया गया है। व्यवासयिक पाठक्रम के वोकेशनल ट्रेनर को प्रशिक्षण राज्य स्तर पर प्रशिक्षत मास्टर ट्रेनर द्वारा विद्यालय में संचालित व्यवासयिक पाठ्यक्रम वोकेशनल ट्रेनर को प्रशिक्षण दिलाया गया है। व्यवासयिक शिक्षा के अतंर्गत एम्पलॉयबिलिटी के लिये आवश्यक हॉर्ड-सॉफ्ट स्किल के विकास की जानकारी, आईसीएस कॅरियर जीपीएस मोबाईल एप पर पंजीयन के बाद विद्यार्थियों को उनकी रूचि और एप्टीट्यूट के अनुसार कॅरियर से संबंधित विकल्पों की जानकारी दी गई। कल्चरर ट्वीनिंग शासकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थी अपने आस-पास के स्कूलों के बीच सकारात्मक तालमेल रख सकें। इसके लिये प्रत्येक जिले में 10 चयनित विद्यालयों में कल्चरर ट्वीनिंग कार्यक्रम को चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के जरिये विद्यार्थियों को आस-पास के विद्यालयों की कला, खेल और कॅरियर से संबंधी गतिविधियों में भागीदारी सुनिश्चित की जा रही है। विद्यार्थियों को संस्कृति, परिवेश, साहित्यिक आयोजन और संवाद जैसे कार्यक्रमों में शामिल होने का अवसर उपलब्ध कराये जा रहे है।

मुंबई, अहमदाबाद और सूरत से भोपाल आने-जाने वाली ट्रेनों में दीपावली और छठ पूजा तक बुकिंग फुल

♦भारत टाइम्स♦

रहीम शेरानी। झाबुआ। दीपावली और छठ पूजा में तीन महीने से अधिक का समय है, लेकिन ट्रेनों में रिजर्वेशन फुल हो गए हैं। ये वह ट्रेनें हैं, जो मुंबई, अहमदाबाद और सूरत की ओर से भोपाल व इटारसी होकर आवागमन करती हैं। ये स्थिति सभी श्रेणियों में है। पिछली बार से अब तक करीब 25 फीसदी रिजर्वेशन ज्यादा करवाए जा चुके हैं। हालांकि राहत की बात यह है की साप्ताहिक व स्पेशल ट्रेनों में नाम मात्र की बर्थ उपलब्ध हैं। वर्तमान में भोपाल और आर के एम पी से रोजाना 1500 से ज्यादा रिजर्वेशन ओवर ऑल हो रहे हैं। इनमें से करीब 40 फीसदी यानी करीब 600 रिजर्वेशन प्रतिदिन उत्तर भारत, बिहार सहित गोरखपुर, राजस्थान व अन्य स्थानों के लिए हो रहे हैं। यदि दोनों ही स्टेशनों की संख्या देखें, तो भोपाल से 850 और आरकेएमपी से हर दिन 650 रिजर्वेशन ओवर ऑल करवाए जाते हैं। कुशीनगर, अमृतसर, संपर्क क्रांति की भी यही स्थिति मुंबई तरफ से चलकर उत्तर भारत की ओर जाने वाली कुशीनगर, अमृतसर, -एलटीटी स्पेशल, संपर्क क्रांति श्रेणी की ट्रेनों में सबसे ज्यादा रिजर्वेशन हुए हैं। - सुपर फास्ट श्रेणी की जो ट्रेनें बची हैं, उनमें भी 5 से 10 वर्थ हैं। यह बर्थ भी अगस्त के पहले सप्ताह तक भरने की उम्मीद है। उत्तर भारत बिहार के लिए 15-15 दिन पहले के टिकट जिन लोगों ने उत्तर भारत, बिहार तरफ जाने के लिए रिजर्वेशन करवाए हैं, उनके टिकट त्योहार के 15-15 दिन पहले के हैं। इस वजह से अक्टूबर के पहले-दूसरे और तीसरे सप्ताह के दौरान अधिकतर ट्रेनें फुल हो चुकी हैं। जो भी ट्रेनें साप्ताहिक व स्पेशल चल रही हैं, उनमें भी नाम मात्र की बर्थ उपलब्ध हैं। भोपाल मंडल में समर स्पेशल ट्रेनें चलेंगी- भोपाल रेल मंडल के सीनियर डीसीएम सौरभ कटारिया का कहना है कि नियमित ट्रेनें फुल होने के बाद यात्रियों की परेशानी को देखते हुए समर व फेस्टिवल स्पेशल ट्रेनें चलाई जाएंगी। **त्योहार पर अतिरिक्त भीड़ के चलते उज्जैन जाने के लिए चलेगी स्पेशल ट्रेन** - भोपाल मंडल रेल प्रशासन ने अतिरिक्त यात्री यातायात को क्लियर करने और सुविधा के लिए भोपाल- उज्जैन-भोपाल के मध्य गाड़ी संख्या 08235/ 08236 भोपाल-उज्जैन- भोपाल स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया है। गाड़ी संख्या 08235 भोपाल-उज्जैन स्पेशल 31 जुलाई तक भोपाल से प्रतिदिन (गुरुवार को छोड़कर) शाम 5.50 बजे चलकर, 6.15 बजे संत हिरदाराम नगर और मार्ग के अन्य स्टेशनों से होते हुए रात 10.20 बजे उज्जैन पहुंचेगी। इसी प्रकार गाड़ी संख्या 08236 उज्जैन-भोपाल स्पेशल 18 जुलाई 1 अगस्त तक उज्जैन से प्रतिदिन 5 बजे चलकर मार्ग के अन्य स्टेशनों से होते हुए 9.23 बजे संत हिरदाराम नगर और रात 9.45 बजे भोपाल पहुंचेगी। गाड़ी रास्ते में दोनों दिशाओं में तराना रोड, मक्सी, काली सिंध, अकोदिया, शुजालपुर, कालीपीपल, सीहोर, संत हिरदाराम नगर स्टेशनों पर रुकेगी रतलाम मंडल से गुजरने वाली 48 ट्रेनों में नवंबर से जुड़ेंगे अतिरिक्त जनरल कोच- रतलाम मंडल के स्टेशनों से चलने और गुजरने वाली 48 ट्रेनों में नवंबर से जनरल श्रेणी के अतिरिक्त कोच जुड़ना शुरू हो जाएंगे। इनमें अधिकांश लंबी दूरी की ट्रेनें हैं। यात्रियों की सुविधा के लिए सामान्य श्रेणी के कोचों की संख्या बढ़ाई जा रही है। इनमें रतलाम से होकर चलने वाली 42 एक्सप्रेस ट्रेनें - शामिल हैं। 24 ट्रेनों में एक-एक जबकि 18 एक्सप्रेस ट्रेनों में 2-2 - कोच लगेंगे।

18 ट्रेनों में 2-2 कोच लगेंगे, होगी सहूलियत

12919/20 डॉ. आंबेडकर नगर- श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा एक्सप्रेस में 15 व 17 नवंबर से 22969/70 ओखा बनारस एक्सप्रेस में 21 व 23 नवंबर से 20941/42 बांद्रा टर्मिनस-गाजीपुर सिटी एक्सप्रेस में 15 व 17 नवंबर 22933/34 बांद्रा टर्मिनस- जयपुर एक्सप्रेस में 18 व 19 नवंबर से 19019/20 बांद्रा टर्मिनस- हरिद्वार एक्सप्रेस 15 व 16 नवंबर 12907/08 बांद्रा टर्मिनस- हजरत निजामुद्दीन एक्सप्रेस 17 व 18 नवंबर से 12962/61 इंदौर- मुंबई सेंट्रल एक्सप्रेस में 15 व 18 नवंबर से 20945/46 एकता नगर-हजरत निजामुद्दीन एक्सप्रेस में 15 व 19 नवंबर से 12917/18 अहमदाबाद-निजामुद्दीन एक्सप्रेस में 18 व 16 नवंबर से लगेंगे !

इन ट्रेनों में एक-एक कोच लगेंगे

19337/38 इंदौर- दिल्ली सराय रोहिल्ला एक्सप्रेस में 17 व 18 नवंबर से उदयपुर सिटी एक्सप्रेस में 19 व 20 नवंबर से 22917/18 बांद्रा टर्मिनस-हरिद्वार एक्सप्रेस में 20 व 21 नवंबर से 12937/38 गांधीधाम- एक्सप्रेस में 16 व 18 नवंबर से 19301/02 डॉ. आंबेडकर नगर हावड़ा-यशवंतपुर एक्सप्रेस 17 व 19 नवंबर से 20921/22 बांद्रा टर्मिनस -लखनऊ एक्सप्रेस में 16 व 17 - नवंबर से 19053/54 सूरत- मुजफ्फरपुर-एक्सप्रेस में 15 व 17 नवंबर से . 20961/62 उधना जंक्शन- बनारस एक्सप्रेस में 19 व 20 नवंबर से 22901/02 बांद्रा टर्मिनस-22944/43 इंदौर- दौंड एक्सप्रेस में 15 व 16 नवंबर से 20932/31 इंदौर- - कोच्चुवेली एक्सप्रेस में 19 व 22 नवंबर से 19315/16 इंदौर-असरवा एक्सप्रेस में 17 व 18 नवंबर से 19575/76 ओखा नाथद्वारा एक्सप्रेस में 20 व 21 नवंबर से।

भारत के भरतनाट्यम नृत्य के संगम को सुरसरि के तट पर प्रवाहित किया

♦भारत टाइम्स♦

वाराणसी। जिला प्रशासन की अभिनव पहल पर शुक्रवार को सुबह ए बनारस के अंतर्गत घाट संध्या कार्यक्रम मे कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष में सनबीम भगवानपुर कॉलेज फॉर वूमेन के विद्यार्थियों ने जिसमें साक्षी, अनन्या, आस्था,आदया, हिमांशी, श्रद्धा,केसर, अरूणिता, ऋषिका, मानसी, सौम्या, वैष्णवी, स्मृति गिरी, श्रुति ने उत्तर भारत का कथक नृत्य एवं दक्षिण भारत के भरतनाट्यम नृत्य के संगम को सुरसरि के तट पर प्रवाहित किया।कार्यक्रम का समापन समस्त कलाकारों ने कारगिल दिवस पर नृत्य नाटिका से किया। कलाकारों को प्रमाण पत्र एवं आशीर्वचन सरिता राव , डॉ विभा श्रीवास्तव एवं वंदना जायसवाल ने प्रदान किया ।प्रमाण पत्र प्रदान करने के साथ संगीत साधना की भी प्रशंसा की गई। कार्यक्रम की परिकल्पना सुबह ए बनारस के सचिव संस्थापक डॉ रत्नेश वर्मा ने किया है। कार्यक्रम का सफल संचालन सीमा केसरी ने किया।

नवांगतुक नायब तहसीलदार ने पदभार ग्रहण कर ग्रामीण क्षेत्रों का भ्रमण किया

उरई (जालौन)। राजस्व विभाग में हुए फेरबदल के तहत कालपी के नायब तहसीलदार हरदीप सिंह का स्थानांतरण उरई भूलेख कार्यालय में हो गया है। उनके स्थान पर नवांगतुक नायब तहसीलदार सुश्री तारा शुक्ला ने पदभार ग्रहण करके राजस्व विभाग का कार्य को शुरू कर दिया है। आयोग से चयनित होने के बाद नायब तहसीलदार सुश्री तारा शुक्ला इटावा जनपद की सैफई, ताखा, इटावा में नायब तहसीलदार के पद पर कुशलतापूर्वक दायित्वों का निर्वाह कर चुकीं। इटावा जनपद से जालौन की कालपी तहसील में नायब तहसीलदार का पदभार संभाल लिया है।

जलकल विभाग की लापरवाही के चलते पूरे नगर की जलापूर्ति ठप, मची हाहाकार

♦भारत टाइम्स♦

रामनगर। स्थानीय जोनल क्षेत्र में शुक्रवार को जलापूर्ति ठप होने से पानी के लिए मची हाहाकार। सिक्किम के राज्यपाल का कालोनी भी प्रभावित लोग इस भीषण उमस भरी गर्मी में पानी के लिए इधर से उधर भटकते रहे। नगर के गोलाघाट, पुराना रामनगर,मुंशीखाना,तपोवन,साहित्य-ाका,रामपुर,मच्छरहट्टा,वारी गढ़ई आदि मुहल्ले में जलापूर्ति ठप पड़ गई। इसके पूर्व में भी जहां जहां पानी आ भी रहा है तो दूषित और मटमैला पानी आ रहा है । इस संबंध में जलकल अभियंता आनद गौरव से मोबाइल पर संपर्क करने की कई बार कोशिश की गई लेकिन उसने मोबाइल नही उठाया। पूर्व सभासद संजय यादव, स्वतंत्रता सेनानी संघठन के जिलाध्यक्ष सरदार सतनाम सिंह,पिछड़ा वर्ग के अध्यक्ष विवेक कहार ने आरोप लगाया है कि रामनगर को जब से निगम में समाहित किया गया है उसके बाद से यहां की जन समस्या ने विकराल रूप धारण कर लिया है इसके लिए इस क्षेत्र के विधायक और पार्षद जिम्मेदार हैं। उनका आरोप है कि जलकल का अवर अभियंता पैसे लेकर कथित ठेकेदारों से लोगों का निजी पानी कनेक्शन जोड़ने, के कार्य में ही पूरा समय देता है। यहां यह बता दें कि निगम द्वारा जब से पूरे नगर के ट्यूबेल पर आटोमेटिक सिस्टम (बंद और चालू)करने का कर दिया गया है।

हजारों तपस्वियों ने महातपस्वी के श्रीमुख से अठाई की तपस्या का किया प्रत्याख्यान...

भगवती सूत्र आगम है तत्त्वज्ञान का खजाना : युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री ने भगवती व्याख्यान माला का किया समापन | **नवदीक्षित साधु-साध्वियों को शांतिदूत ने प्रदान की बड़ी दीक्षा**

♦भारत टाइम्स♦

वेसु। सूरत (गुजरात)। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने महावीर समवसरण में उपस्थित जनता को पावन प्रतिबोध प्रदान करते हुए कहा कि भगवती सूत्र तत्त्वज्ञान का खजाना भरा हुआ है। यह अंग आगम है और इस एक पोथे में विभिन्न विषयों की जानकारियां दी गई हैं। इसके स्वाध्याय से विभिन्न जानकारियां मिल सकती हैं और श्रुत की संपदा प्राप्त हो सकती है। इसमें जैसा वर्णन क्रम है, उसके अनुसार गौतम स्वामी की अच्छी भूमिका है। वे प्रश्नकर्ता हैं, उनके प्रश्नों का उत्तर देने में भगवान महावीर ने भी कितना श्रम किया गया होगा। प्रश्नकर्ता और समाधान प्रदाता दोनों का अच्छा योग मिलने पर कितनों को नया अवबोध प्राप्त हो सकता है। भगवती सूत्र के 41वें शतक के अंतिम सूत्र में गौतम स्वामी ने अपने प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के उपरान्त भगवान महावीर को वंदन और नमस्कार कर निवेदन करते हैं कि जो आपने कहा है, वह सत्य है। तदुपरान्त गौतम स्वामी वहां से ज्ञान ग्रहण कर विहरण करते हैं। इस प्रकार भगवती सूत्र संवादात्मक शैली वाला ग्रंथ है। इस भगवती सूत्र में मैंने देखा कि कहीं पर भी कृतज्ञता ज्ञापन वाली बात नहीं आई। गौतम स्वामी ने भगवान महावीर के प्रति कृतज्ञता प्रकट नहीं किया है। अन्य आगमों में भी कृतज्ञता ज्ञापित नहीं मिला है। शायद कृतज्ञता व्यावहारिक रूप हो सकता है, इस प्रक्रिया से गौतम स्वामी बहुत ऊंचे उठे हुए लग रहे हैं। विनय का प्रयोग, वंदन और नमस्कार अवश्य किया गया है, किन्तु कृतज्ञता की बात नहीं है। हमें जो आज ज्ञान प्राप्त हो रहा है, उसके बड़े माध्यम गौतम स्वामी बने हैं। इस भगवती सूत्र का कोई अध्ययन करे तो कितना-कितना तत्त्वज्ञान ग्रहण किया जा सकता है। आज मैं यहां भगवती सूत्र को विदाई दे रहा हूं। कल से आचारंगभाष्यम् पर प्रवचन करने का संभवतः प्रयास करूंगा। तदुपरान्त आचार्यश्री ने गुरुदेव तुलसी द्वारा रचित पुस्तक ह्यचंदन की चुटकी भलीह्न में सनत्कुमार के संदर्भ में वर्णित पद्यों की संगीतमय आख्यान को जनता को प्रदान किया। इस दौरान आचार्यश्री ने उसकी व्याख्या भी की। अपने आराध्य के श्रीमुख से भगवती सूत्र से तात्त्विक ज्ञान व संगीतमय आख्यान का श्रवण कर डायमण्ड नगरी की जनता की अत्यंत हर्षित नजर आ रही थी। मंगल प्रवचन व संगीतमय आख्यान के उपरान्त आचार्यश्री महाश्रमणजी ने सात दिन पूर्व दीक्षित हुए साधु-साध्वियों को आर्षवाणी का समुच्चारण करते हुए बड़ी दीक्षा (छेदोपस्थापनीय चारित्र) प्रदान की। आर्षवाणी का उच्चारण कर आचार्यश्री ने नवदीक्षितों को पंचमहाव्रतों में स्थापित किया। तदुपरान्त आचार्यश्री ने नवदीक्षित साधु-साध्वियों को मंगल प्रेरणा भी प्रदान की। महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि में सूरत शहर की ओर से सामूहिक रूप में अठाई की तपस्या के अनुपम प्रयोग के अंतर्गत आज तपस्वियों ने श्रीमुख से अठाई की तपस्या का त्याग स्वीकार किया। हजारों की संख्या में उपस्थित होकर सूरतवासियों ने अपने महातपस्वी आचार्य को अपनी आध्यात्मिक भेंट अर्पित की। मुनि चिन्मयकुमारजी ने आचार्यश्री से आठ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। मुनि राजकुमारजी ने गीत का संगान किया। आज आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा आयोजित मेधावी छात्र सम्मान समारोह का भी आयोजन हुआ। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के एजुकेशन कमिटी की चेयरमेन डॉ. वंदना डांगी, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पंकज ओस्तवाल, ट्रस्टी श्री संजय जैन ने अपनी अभिव्यक्ति दी। इस संदर्भ में शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन आशीष प्रदान करते हुए कहा कि जीवन में ज्ञान का महत्त्व तो आचरण का भी बहुत महत्त्व होता है। संसारी जीवन में धन, पद, प्रतिष्ठा आदि का भी अपना महत्त्व है। आज मेधावी सम्मान समारोह का प्रसंग है। मेधावी बनना भी जीवन एक उपलब्धि है। व्यवहार में अंक एक कसौटी बनती है। तेरापंथ समाज के बच्चों को अच्छा विकास का रास्ता मिले। उनमें अच्छा संकल्प रहे। संकल्प से सफलता की प्राप्ति हो सकती है। जीवन में आचरणों की शुद्धि रहे। जीवन नशे से मुक्त रहे। छात्र-छात्राएं अपने जीवन में धार्मिक-आध्यात्मिकता का भी विकास करने का प्रयास करें। आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में आरम्भ हो चुके उपासक शिविर के संदर्भ में समुपस्थित उपासक-उपासिकाओं को उपसंपदा प्रदान की।

बागेश्वर धाम के महाराज से जमुना दास महाराज ने भेट कर कालपी में कार्यक्रम पर चर्चा

♦भारत टाइम्स♦

उरई जालौन। विश्व विख्यात धर्म स्थल बागेश्वर धाम की मां बनखंडी देवी शक्ति पीठ के महंत जमुना दास महाराज ने धार्मिक यात्रा की। बागेश्वर महाराज पं धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री ने जमुना दास महाराज का सम्मान पूर्वक स्वागत किया। दरअसल बागेश्वर धाम सरकार श्री धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री की महर्षि वेदव्यास की जन्मभूमि कालपी में एक कार्यक्रम आयोजन की इच्छा बहुत समय से बनी हुई थी।उनकी इच्छा पर सुदामा कुटी वृंदावन और गुरु प्रसाद शर्मा जी के माध्यम से वनखंडी शक्ति पीठ के पीठाधीश्वर महन्त जमुनादास जी ने उनके जन्मदिवस पर अपने शिष्य ऋषभ देव जी को बागेश्वर धाम भेजा एवम उनका दर्शन मेला किया। तदोपरांत गुरु पूर्णिमा के पश्चात बनखंडी शक्ति पीठ के पीठाधीश्वर महन्त श्री जमुनादास जी अपने शिष्यों राघवेन्द्र प्रताप सिंह, विजय सिंह, नागेंद्र गुप्ता, नीतू गुप्ता आदि के साथ आयोजन की चर्चा हेतु बागेश्वर धाम पहुंचे महराज श्री ने माता रानी के प्रसाद स्वरूप चुनरी पहनाकर उनका सम्मान किया।

अरजपुरी एवं खैरकट्टा की बालिका क्षेत्रीय स्तरीय कबड्डी खैरागढ़ व राजनांदगांव के लिए चयनित

♦भारत टाइम्स♦

बालोद (डौंडी लोहारा)। खैरागढ़ में दिनांक 2/8/2024 को 14 वर्ष बालिका कबड्डी के लिए कु. इन्दू पिता श्री केशवराम एवं कु. हुमेश्वरी पिता श्री पुसुराम दोनो शास. पुर्व. माध्यमिक शाला खैरकट्टा एवं राजनांदगांव मे दिनांक 06/08/2024 17 वर्ष बालिका कबड्डी के लिए कु. यामिनी पिता रमेश कुमार शास. उ. मा. विद्यालय अरजपुरी का उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर क्षेत्रीय खेल के लिए चयन हुआ है।

सांसदों, विधायकों और एमएलसी से मिले योगी, तैयार होगी क्षेत्रीय विकास की कार्ययोजना

♦भारत टाइम्स♦

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश के सभी 18 मंडलों के जनप्रतिनिधियों संग लोकसभा चुनाव 2024 के परिणामों को लेकर विस्तार से समीक्षा बैठक पूरी कर ली है। तकरीबन 20 दिन तक चली मंडलवार बैठकों में सांसदगण, विधायकगण और एमएलसी सीएम के समक्ष अपने क्षेत्र की समस्याओं और जन अपेक्षाओं को लेकर उपस्थित हुए। वहीं मुख्यमंत्री ने भी सभी जनप्रतिनिधियों को धैयपूर्वक सुनते हुए तथा उनकी अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए अधिकारियों को निर्देशित किया है कि प्रत्येक क्षेत्र के लिए क्षेत्रीय विकास की नई रणनीति तैयार की जाए। 7 जुलाई को देवीपाटन और अयोध्या मंडल से शुरू हुई मंडलवार समीक्षा बैठक शुक्रवार को लखनऊ मंडल के साथ समाप्त हो गई है। मंडलवार बैठक में पहुंचने वाले जनप्रतिनिधिगणों ने खुलकर अपनी बात कही है। वहीं मुख्यमंत्री ने भी विस्तार से भी की बातों को सुनने के बाद आगामी 2027 के विधानसभा चुनाव को लेकर जीत का मंत्र भी दिया। सीएम योगी ने संवाद, सक्रियता और सोशल मीडिया पर सर्वाधिक फोकस करने के लिए कहा है। उन्होंने कहा है कि सभी जनप्रतिनिधिगण अपने अपने क्षेत्र में हो रहे विकास कार्यों को जनता तक जरूर पहुंचाएं। इसके अलावा विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों से संपर्क लगातार बनाए रखें। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा है कि विपक्ष की ओर से सोशल मीडिया के जरिए फैलाए जा रहे अफवाहों और सामाजिक ताने-बाने को नष्ट करने के प्रयास का मुखर होकर विरोध करें। सोशल मीडिया का उपयोग करते हुए विपक्ष के हर झूठ को बेनकाब करें और जनता के बीच सच लेकर जाएं। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा है कि सभी जनप्रतिनिधि अपने अपने क्षेत्र में युवाओं और महिला संगठनों से संपर्क और संवाद स्थापित करें। युवाओं को बताएं कि बिना किसी रिश्वत और जाति, मत, मजहब के भेद के निष्पक्ष तरीके से सरकारी नौकरियां प्रदान की जा रही है। ऐसे युवाओं से संपर्क स्थापित करें जिन्हें बिना भेदभाव और रिश्वत के नौकरियां मिली हैं। इसके साथ ही अपने अपने क्षेत्र के खिलाड़ियों से भी लगातार संपर्क बनाए रखें। मुख्यमंत्री ने इसके अलावा सभी जनप्रतिनिधियों को आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर अभी से जुटने की नसीहत दी है। उन्होंने कहा है इस लोकसभा चुनाव में आपके क्षेत्र में हुए मतदान का बारीकी से एनालिसिस करें और इसी के आधार पर अपनी कार्ययोजना तैयार करें। सीएम योगी ने सभी जनप्रतिनिधियों को यह भी कहा कि शासन के लोककल्याणकारी कार्यों को धरातल पर उतारने में कोई भी अधिकारी हीलाहवाली करे तो उसकी लिखित शिकायत करें, कार्रवाई निश्चित की जाएगी।

कारगिल विजय दिवस मनाकर वीरों को किया याद

♦भारत टाइम्स♦

उरई (जालौन)। एनसीसी के कमांड अधिकारी कर्नल दुष्यंत सिंह चौहान के निर्देशन पर एनसीसी यूनिट एमएसवी इंटर कॉलेज कालपी के एनसीसी कैंडिडेट के द्वारा कारगिल विजय दिवस मनाया गया। इस दौरान। छात्र- छात्राओं को कारगिल युद्ध में सैनिकों के शौर्य एवं बलिदान की डॉक्यूमेंट्री फिल्म दिखाकर देश सेवा के लिए प्रेरित किया गया। विद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम में एनसीसी शिक्षक लेफ्टिनेंट राजमणि सिंह ने कारगिल युद्ध के विषय पर कैंडिडेटों से निबंध प्रतियोगिता कराई तथा शहीदों की याद में बाल पेंटिंग कर-के उन्हें याद किया गया। उन्होंने कहा कि सभी कैंडीडेट्स कारगिल के वीर सपूतों के अदम्य साहस से प्रेरणा लें। उन्होंने बताया कि एनसीसी के एडम अधिकारी नीलेश कुमार झा की प्रेरणा से छात्र-छात्राओं के साथ कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

सरस्वती शिशु विद्या मंदिर उ. मा. वि. पिपलियामंडी

♦भारत टाइम्स♦

महेश मरेठा। पिपलिया/मंडी। नगर के सरस्वती शिशु विद्या मंदिर मे आज 25 वाँ कारगिल विजय दिवस बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया! कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि के रूप मे श्री रूपचंद जी महावर (भुत पूर्व सैनिक) श्री पुखराज जी गुप्ता (सचिव महोदय) एवं विद्यालय के अभिभावक एवं विद्यालय प्राचार्य मंचसीन हुए अतिथि परिचय प्राचार्य श्री प्रकाश जी धाकड़ एवं स्वागत विद्यालय के दीदी श्रीमती पूजा पोरवाल एवं सु श्री रुचिका शक्तावत द्वारा किया गया! कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री रूपचंद जी महावर द्वारा कारगिल विजय दिवस पर पूरा विषय भैया बहिनों के सामने रखा गया।

मोची की दुकान पर पहुंच चप्पल सिलने लगे राहुल गांधी

दुकानदार से पूछा-कितने रुपये कमा लेते हो...

♦भारत टाइम्स♦

(शीतल निर्भीक)। लखनऊ। उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर दीवानी न्यायालय से लखनऊ जाते समय शुक्रवार को अचानक राहुल गांधी का काफिला गुप्तारगंज के विधायक नगर के रामचेत मोची की दुकान पर रुका। लोग जब तक कुछ समझ पाते, राहुल दुकान में जा बैठे और रामचेत से बातचीत करने लगे। इस दौरान राहुल गांधी ने जूते-चप्पल की सिलाई भी की। उनसे काम में आने वाली दिक्कतों को भी जाना। आश्वासन दिया कि हम आपकी आवाज बनेंगे। इस दौरान राहुल गांधी ने पूछा कि परिवार कैसे चलता है? रामचेत ने कहा कि दुकान से कभी 100 तो कभी 50 रुपये मिल जाते हैं। जवाब सुनकर राहुल सोच में पड़ गए और पूछा कि इतनी कम कमाई में परिवार का गुजारा कैसे करते हैं? रामचेत ने राहुल को काम की बारीकियों से अवगत कराया और कहा कि घर की माली हालत बहुत खराब है। कुछ आर्थिक मदद हो जाय तो नया व्यवसाय शुरू कर दूं। इस काम में स्वाभिमान नहीं है। लोग हेय दृष्टि से देखते हैं। यही कारण है कि बेटे को इस काम से दूर रखा है। राहुल गांधी ने दिलासा देते हुए कहा कि सबकी आवाज मैं उठाऊंगा। दुकान में बैठे राहुल ने चप्पल व जूते की सिलाई का तरीका पूछते ही एक चप्पल उठा ली और उसे सिलने लगे। राहुल का यह अंदाज देख सभी दंग रह गए। करीब पांच मिनट तक राहुल दुकान में रहे और जूते-चप्पल बनाने की बारीकियों को समझते रहे। इस दौरान उन्होंने ठंडा मंगाकर रामचेत और उसके परिवार को पिलाया। परिवार के साथ फोटो खिंचवाई और खुद भी सेल्फी ली। राहुल के जाने के बाद रामचेत ने बताया कि हमारे काम को लोग नीचा समझते हैं, लेकिन राहुल गांधी ने आकर सम्मान बढ़ाने का कार्य किया। ऐसा किसी और नेता ने अब तक नहीं किया। उनसे बातकर लगा कि गरीबों की आवाज सुनने वाला नेता देश में है।

दीवानी न्यायालय में राहुल पर पुष्पवर्षा

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी शुक्रवार सुबह करीब 11 बजे कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय, पूर्व एमएलसी दीपक सिंह के साथ दीवानी न्यायालय परिसर में दाखिल हुए। उनके पहुंचते ही वहां पहले से मौजूद कांग्रेसियों ने उनका स्वागत पुष्पवर्षा कर किया। इस दौरान भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पुलिस को मशक्कत करनी पड़ी।

कार्यकताओं की धक्का-मुक्की से नाराज दिखे राहुल

दीवानी न्यायालय में स्वागत के बाद हाथ मिलाने के लिए कार्यकताओं की धक्कामुक्की से राहुल गांधी नाराज दिखे। उन्होंने सुरक्षाकर्मियों से रास्ता बनाने के लिए कहा। इस दौरान राहुल के चेहरे पर नाराजगी के भाव दिखे। हालांकि उन्होंने कुछ नहीं बोला।

कार्यकर्ता ने आंबेडकर का चित्र थमाया,सीओ ने हटाया

राहुल के पहुंचने के बाद एक कांग्रेसी कार्यकर्ता ने उन्हें डॉ. भीमराव आंबेडकर का चित्र देने की कोशिश की। काफी देर तक वह चित्र को हवा में लहराता रहा। अचानक राहुल की नजर चित्र पर पड़ी तो उन्होंने उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन तभी सीओ शिवम मिश्र ने उस चित्र और कार्यकर्ता को पीछे धकेलते हुए राहुल गांधी को कार्यकताओं से बचाते हुए कोर्ट की ओर लेकर चले गए।

एक पेड़ मां के नाम' अभियान अंतर्गत हाथीपावा पहाड़ी पर किया गया वृक्षारोपण

♦भारत टाइम्स♦

रहीम शेरानी। झाबुआ। एक पेड़ मां के नामह्व अभियान अंतर्गत किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग एवं जन अभियान परिषद द्वारा हाथीपावा पहाड़ी पर आज शुक्रवार को वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस वृक्षारोपण कार्यक्रम अंतर्गत कलेक्टर नेहा मीना, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व झाबुआ सत्यनारायण दर्रो, उप संचालक कृषि नगीन रावत, जी.एस. त्रिवेदी कृषि विभाग,पीडब्ल्यूडी विभाग के अधिकारी अरूण कुमार मंडलोई, अरीर अहमद गौरी, जन अभियान परिषद समन्वयक भीमसिंह डामोर, आयुष अधिकारी डॉ. प्रमिला चौहान, कृषि विभाग के समस्त अधिकारी कर्मचारियों, जनाभियान परिषद के सदस्य एवं अन्य विभाग के अधिकारियों द्वारा पौधरोपण किया गया। जिसमे नीम, पीपल, करंज, आंवला, गुलर, खिरनी, सागवान, महुआ, शीशम, कड़ई, जामुन, पीपल आदि बहुप्रजातीय पौधो का वृक्षारोपण किया गया।

पूर्व सांसद महेन्द्रनाथ पांडेय ने सब्जी अनुसंधान केंद्र पूर्ण कराने को लेकर शिवराज सिंह चौहान से की मुलाकात

♦भारत टाइम्स♦

धानापुर (चंदौली)/बजरंगी प्रसाद। चंदौली के पूर्व सांसद व पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ महेन्द्रनाथ पांडेय ने नई दिल्ली में केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान से मुलाकात किया। चंदौली के माधोपुर ग्राम में बन रहे इंडो इजराइल तकनीकी पर आधारित सब्जी अनुसंधान केंद्र के निर्माण में तेजी लाने का आग्रह किया। बताया कि केंद्र निर्माण के बाद किसानों को सब्जी की आधुनिक खेती करने में सहूलियत होगी। इससे किसानों की आय बढ़ाने के साथ सब्जी की पैदावार भी बढ़ जाएगी। साथ ही कृषि के क्षेत्र में बदलाव देखने को मिलेगा। बता दें कि जनपद चंदौली के धानापुर विकास खंड के माधोपुर ग्राम सभा में इंडो इजराइल तकनीकी से आधुनिक सब्जी अनुसंधान केंद्र का प्रस्ताव निमार्णाधीन है। निर्माण कार्य मे सुस्ती होने से किसानों में निराशा देखने को मिल रही है। ऐसे में किसानों की मांग के बाद पूर्व सांसद एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ महेंद्र नाथ पांडे ने मामले को संज्ञान में लिया और नई दिल्ली मे केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान तक किसानो की समस्याओ को पहुचाया।

रूद्र व्यास ने महात्मा गाँधी सर्वोदय विचार परीक्षा में प्राप्त किया प्रथम स्थान

♦भारत टाइम्स♦

नाथद्वारा। नाथद्वारा इंस्टिट्यूट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट, उपली ओडन, के शिक्षा संकाय के विभागाध्यक्ष डॉ.मुकेश शर्मा ने बताया कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर राजस्थान द्वारा आयोजित महात्मा गाँधी सर्वोदय विचार परीक्षा 2023 का आयोजन जनवरी माह में हुई थी क परीक्षा में कुल 100 वैकल्पिक प्रश्न किये गए क ग्रुप-3 में नाथद्वारा इंस्टीट्यूट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट महाविद्यालय के छात्र रूद्र व्यास पुत्र श्री जितेन्द्र व्यास ने महाविद्यालय वर्ग की जिला स्तरीय वरीयता सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया इस उपलब्धि के लिए महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. रंजना शर्मा एवं महाविद्यालय प्रबंध निदेशक दीपेश पारीख ने छात्र रूद्र व्यास बधाई देते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना कीक।

कारगिल युद्ध के दौरान भारतीय जवानों के अदम्य शौर्य और साहस का लोहा दुनिया ने माना: सीएम योगी

सीएम योगी कारगिल विजय दिवस की 25वीं वर्षगांठ पर आयोजित 'रजत जयंती समारोह' में हुए शामिल

- सीएम योगी ने कहा- दुनिया के अंदर भारत की पहचान जबरन एकाधिकार करने वाले देश की नहीं
- बोले सीएम- देश की सीमा की रक्षा करने वाले बहादुर जवानों के साथ राज्य सरकार हमेशा खड़ी है

♦भारत टाइम्स♦

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कारगिल युद्ध भारत पर थोपा गया था। छद्म रुप से पाकिस्तान ने कश्मीर में घुसपैठ करके भारत पर युद्ध थोपने का कार्य किया था। किन्तु युद्ध का परिणाम क्या होगा यह हमारे बहादुर जवानों ने तय किया। उस समय हमारी सेना के वीर जवानों के सामने विपरीत परिस्थितियां थीं, लेकिन हमारे बहादुर जवानों के सामने कोई दुश्मन टिक नहीं पाया। उन्होंने कहा कि कारगिल युद्ध के दौरान भारतीय जवानों के अदम्य शौर्य और साहस का लोहा दुनिया ने माना। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को सेंट्रल कमांड, कैंट के सूर्या सभागार में कारगिल विजय दिवस की 25वीं वर्षगांठ पर आयोजित 'रजत जयंती समारोह' को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने कारगिल विजय दिवस की बधाई देते हुए कहा कि जिन वीर नारियों और परिवारों ने कारगिल युद्ध में अपने परिवार के सदस्यों को खोया है, आज उन्हें सम्मानित कर गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। सीएम योगी ने कहा कि दुनिया के अंदर भारत की पहचान जबरन एकाधिकार करने वाले देश की नहीं है। सीएम योगी ने कहा कि शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्रचिंता प्रवृत्तते यह भारत की परंपरा है। उन्होंने कहा कि बल, बुद्धि और विद्या में भारत जब दुनिया के अंदर जब सिरमौर था, तब भी हमने किसी पर आक्रमण नहीं किया। परंतु किसी आक्रांता ने यहां आकर हमारी शांति और हमारी सद्भावना के हनन का दुस्साहस किया तो भारत माता के बहादुर जवानों ने मातृभूमि के रक्षा करने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। सीएम योगी ने कहा कि देश की सीमा की रक्षा करने वाले बहादुर जवानों के साथ राज्य सरकार हमेशा खड़ी है। सीएम योगी ने कहा कि हमारा जवान किसी भी युद्ध या सीमा की सुरक्षा करते हुए शहीद होता है, तो राज्य सरकार की ओर उसके परिवार को आज 50 लाख रुपए की सहायता दी जा रही है। साथ ही उस परिवार के एक सदस्य की नौकरी भी व्यवस्था सुनिश्चित की है। इसके अलावा 2017 से हमारी सरकार ने यह भी सुनिश्चित किया कि शहीद होने वाले जवान की स्मृति को आगे बढ़ाने के लिए जिस गांव, नगर, कस्बे का वह जवान होगा, वहां पर एक भव्य स्मारक, इंस्टिट्यूट या किसी मार्ग का नामकरण उस जवान के नाम पर करेंगे। सीएम योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी विकसित भारत के संकल्प को इसलिए ही आगे बढ़ा पा रहे हैं क्योंकि आज देश की सीमाएं सुरक्षित हैं।

अमर जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित की

इससे पहले सीएम योगी सेंट्रल कमांड, कैंट में कारगिल विजय दिवस की 25वीं वर्षगांठ पर आयोजित 'रजत जयंती समारोह' में शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने अमर जवानों को पुष्पचक्र चढ़ाकर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हें नमन किया। साथ सीएम योगी ने कारगिल युद्ध के दौरान भारत के वीर जवानों के शौर्य को प्रदर्शित करती हुई प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया। इस अवसर पर सीएम योगी ने एक्स पर पोस्ट करते हुए प्रदेशवासियों को बधाई दी और भारतीय सेना के पराक्रमी योद्धाओं को नमन किया। उन्होंने लिखा ₹भारतीय सशस्त्र बलों के अदम्य शौर्य, अद्वितीय पराक्रम एवं अप्रतिम साहस के प्रतीक 'कारगिल विजय दिवस' की प्रदेश वासियों को हार्दिक बधाई! मां भारती के सम्मान और संप्रभुता को अक्षुण्ण बनाए रखने हेतु अपना सर्वोच्च बलिदान देने वाले अमर जवानों को नमन! भारतीय सेना की कर्तव्यनिष्ठा व त्याग की भावना पर हमें गर्व है।

इन्हें किया सम्मानित

इस मौके पर सीएम योगी ने परमवीर चक्र विजेता कैप्टन मनोज पांडेय के पिता, राइफलमैन सुनील जंग की माता, नायक आबिद खान की माता, नायक रामकेश चंद्र यादव की पत्नी, नायक राजेंद्र यादव की पत्नी, लांस नायक अशोक कुमार यादव के बेटे, ब्रिगेडियर अखिल कुमार सिन्हा, कर्नल प्रभात रंजन, कर्नल ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह कौशिक, कर्नल क्षितिज श्रीवास्तव, नायक जितेंद्र सिंह और सिपाही विनोद कुमार दुबे को सम्मानित किया।

मंडल चिकित्सालय में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन, 55 रेल कर्मियों का हृदय संबंधी जांच

♦भारत टाइम्स♦

(शीतल निर्भीक)। वाराणसी। पूर्वोत्तर रेलवे मंडल चिकित्सालय, रेल कर्मियों के स्वास्थ्य के प्रति सजग रहते हुए उनके उच्च गुणवत्तायुक्त इलाज हेतु सतत प्रयासरत है। इसी कड़ी में, मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव के निर्देशन एवं मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ आर जे चौधुरी के नेतृत्व में मंडल चिकित्सालय, लहरतारा वाराणसी में आज 26 जुलाई 2024 (शुक्रवार) को पूर्वाह्न 10:00 बजे से 13:00 बजे तक बत्रा हॉस्पिटल नई दिल्ली द्वारा स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में हृदय रोगियों के लिए सुपर स्पेशलिस्ट डॉक्टर डॉ संजीव शर्मा ने रेलवे कर्मचारियों की हृदय संबंधित, लिपिड प्रोफाइल, रक्तचाप एवं रक्त नमूनों की जांच कर आवश्यक सुझाव दिए। इस स्वास्थ्य शिविर में वाराणसी मंडल पर कार्यरत 55 कर्मचारियों एवं उनके परिजनों का हेल्थ चेकअप किया गया और पीड़ितों को उचित उपचार हेतु जांच एवं मेडिसिन प्रिस्क्राइब किया गया।

सरस्वती शिशु मंदिर मे भैया बहिनों को दी लोकतंत्र की जानकारी

♦भारत टाइम्स♦

महेश मरेठा। पिपलिया/मंडी। नगर के सरस्वती शिशु विद्या मंदिर मे आज भैया बहिनों को लोकतंत्र की जानकारी देने के लिए लोकसभा चुनाव का प्रेक्टिकल करवाया गया! हर कक्षा को एक संसदीय क्षेत्र माना गया! हर कक्षा से 2 सदस्य मनोनीत किये गए! उसके पश्चात प्रधानमंत्री का निर्वाचन सभी सांसदों ने मत डालकर किया! भैया दीपांशु प्रधानमंत्री मनोनीत किये गए! एवं विद्यालय मे आवश्यक दायित्वों पर सर्व सम्मती से उपप्रधानमंत्री भैया पीयूष माली, खेल मंत्री भैया केशव मकवाना, सांस्कृतिक मंत्री बहिन योगमाया माली, विसर्जन मंत्री बहिन ईशिका माली पर्यटन मंत्री बहिन दिव्यांशी माली, एवं भैया नारायण सिंह को विपक्ष प्रमुख का दायित्व सौंपा गया सभी भैया बहिनों को प्राचार्य प्रधानाचार्य एवं आचार्य परिवार ने बधाई दी।

मंदसौर विश्वविद्यालय में नवागंतुक छात्रों का स्वागत

♦भारत टाइम्स♦

मंदसौर। विश्वविद्यालय में सत्र 2024-25 में नामांकन लेने वाले छात्रों का 5 दिवसीय छात्र इंडक्शन कार्यक्रम दीक्षारंभ शुरू हुआ है, जिसके समन्वयक डॉ. अविनाश विक्रम हैं। इस दौरान नवागंतुक छात्रों का विश्वविद्यालय परिसर में स्वागत करने के पश्चात विश्वविद्यालय की विभिन्न तरह की पॉलिसी से रूबरू कराया गया। इस दीक्षारम्भ कार्यक्रम में मंदसौर विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट, आर्ट्स, बीसीए, एमसीए, एग्रीकल्चर, लाइफ साइंस, और फोरेंसिक साइंस जैसे विभिन्न विभागों के छात्रों ने प्रतिभाग किया। इस समारोह की शुरूआत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वी. एस. एस. कुमार, डीन अकादमिक डॉ. अरुणवा दास, और कुलसचिव आशीष पारीख द्वारा सरस्वती वंदना के पश्चात दीप प्रज्ज्वलन से की गई। नवागंतुक छात्रों को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय के डीन ऑफ अकादमिक डॉ. दास ने उन्हें विश्वविद्यालय की अकादमिक गतिविधियों से रूबरू कराया, जिसमें छात्रों को 75 प्रतिशत की उपस्थिति को अतिमहत्वपूर्ण बताया। आगे उन्होने शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए छात्रों को अन्य कार्यों के साथ-साथ अध्ययन के लिए समय संयोजन के गुण बताए। अपने संबोधन के अंत में डॉ. दास ने सभी छात्रों को उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव आशीष पारीख ने छात्रों को विश्वविद्यालय की आचार संहिता के बारे में बताया और अनुशासन के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कॉलेज के नियम और कायदों को समझाते हुए छात्रों के सवालों के जवाब भी दिए। इस दीक्षारम्भ कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मंदसौर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वी. एस. एस. कुमार ने सभी नए छात्रों से मुलाकात की और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर जोर दिया। दीक्षारंभ में उपस्थित छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए प्रो.वी.एस.एस.कुमार ने विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय में उपलब्ध संसाधनों व सुविधाओं का सुदपयोग करने और शिक्षण अध्ययन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रेरित किया तथा विश्वविद्यालय में उपलब्ध अनुसंधान संबंधी सुविधाओं तथा उनकी कार्यप्रणाली से विद्यार्थियों को अवगत कराया। आगे उन्होंने इस दीक्षारंभ को एक नई शुरूआत बताया और कहा कि अवश्य ही यह आयोजन इस यात्रा में विद्यार्थियों के लिए सहयोगी साबित होगा। इस पाँच दिवसीय दीक्षारंभ कार्यक्रम में विद्यार्थियों के बीच सामाजीकरण को बढ़ावा देना, शैक्षणिक जगत में हो रहे बदलाव से रूबरू कराना, अनुशासन और अनुभव के आयामों को समाहित करने, सभी विभागों और पाठ्क्रम का परिचय, प्रयोशालाएं, कार्यशालाएं, डिजिटल संसाधनों का अवलोकन, पुस्तकालय भ्रमण, कैरियर परामर्श और प्लेसमेंट सेल का अवलोकन, प्रश्नोतरी सत्र, संवेदीकरण और जागरूकता कार्यक्रम-संवैधानिक मौलिक कर्तव्यों, कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम 2013, सूचना का अधिकार 2005, लोकसेवा गारंटी अधिनियम 2010, साइबर और बौद्धिक संपदा अधिकार आदि विषय सम्मिलित हैं। नवप्रवेशित विद्यार्थियों को नए परिवेश में सहज महसूस कराने, उनमें संस्थान की विशिष्ट प्रकृति तथा संस्कृति को सिखाने, अन्य छात्रों और संकाय सदस्यों के साथ संबंध बनाने तथा उन्हें व्यापक उद्देश्य तथा स्वयं की खोज की भावना से परिचित कराने के उद्देश्य से दीक्षारंभ समारोह 2024 का आयोजन किया गया है।

राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड राज्य पुरस्कार प्रशिक्षण शिविर में बालक सीख रहे है जीवन जीने की कला

♦भारत टाइम्स♦

रायपुर-मारवाड़। महावीर प्रसाद खीची राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड राज्य पुरस्कार प्रशिक्षण शिविर स्थानीय संघ रायपुर के बैनर तले बालक 5 दिवसीय शिवीर में भाग लेकर अपने जीवन को सवार रहे है।और साथ ही जीवन जीने की कलाओं में दक्षता हासिल कर रहे है। स्थानीय संघ सचिव दिनेश कुमार ने जानकारी दी है कि यह 5 दिवसीय राज्य पुरस्कार प्रशिक्षण शिविर - शिविर संचालक बंशीनाथ के निर्देशन में 15 दक्ष प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जा रहा है। आज गुरुवार 26 जुलाई को ऊएएड प्राथमिक शिक्षा समिति मदन लाल पंवार, CBEEO रायपुर किरण बाला , ACBEEO रायपुर ढंगलाराम सहीत विनोद कुमार मेहरा LT SCOUT स्काउट ने कार्यक्रम में शिरकत कर स्वक लगभग 5 स्थानीय संघो के 120 स्काउट गाइड बालचरो को आशीर्वचन देकर होसला बढ़ाया। सभी मेहमानों का शिविर में स्कार्फ ,बागल, शॉल व साफा पहनाकर सम्मान किया गया। सभी बालचर शिविर की प्रत्येक गतिविधि में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेकर आनंद की अनुभूति कर रहे है। शिविर में सबसे ज्यादा आकषर्ण का केंद्र रात्रिकालीन शिविर ज्वाल कार्यक्रम रहता है, जिसमें सभी बालचर बढ़ कर नृत्य, गायन, नाट्य कला का एक से बढ़कर एक नायाब उदाहरण पेश कर रहे। शिविर में दक्ष प्रशिक्षकों में प्रेमाराम डाबी, बगदाराम सेन, राजाराम, मंगलाराम, कलीमुद्दीन, जेराराम माली, सूर्यप्रकाश परमार, विनोद वैष्णव , अल्का, मोहनलाल कुमावत, शंकर लाल सहीत नरेंद्र कुमार इत्यादि अपनी सेवा देकर विद्यार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान कर रहे है।